वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

2.1

सूचना पत्र

International Sociological Association

वर्ग की वापसी

गोरान थॅबोर्न

कोमतार के (गैर)नागरिक

अया फेब्रोस

व्यवस्था की अव्यवस्था

बॉवेन्चुरा ड सोसा सान्टोज

> अंग्रेजी भाषा का आधिपत्य
> राष्ट्रीय समाजशास्त्र: पेरु एवं रोमानिया
> उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड, 1924–2011
> इतिहास का कोना: महिलाओं का समावेश
> मानवाधिकार: अर्मेनिया में पितृसत्ता
> सार्वजनिक समाजशास्त्र: दक्षिण अफ्रीकी दृष्टिकोण
> आई.एस.ए.: युवा समाजशास्त्रियों को अंगीकार करते हुए
> महिलाओं की दुनिया
> ब्राजीलियन समाजशास्त्रीय समिति

अंक 2 / क्रमांक 1 / सितम्बर 2011

GDN

> सम्पादकीय

इसे लिखते वक्त तक लीबीयन शासन का पतन हो चुका होगा और सब सोचा जा चुका होगा कि अब आगे क्या होने वाला है, न केवल लीबीया में बल्कि सारे अरब जगत में । अस्तव्यस्तता को वैश्विक आयाम मान लिया गया है और जैसा कि इस अंक में गोरान थॅर्बोन ने वैश्विक पैमाने पर असमानता का निदान किया है और वर्ग राजनीति की वापसी की अवधारणा बनाई हैय बॉवेन्चुरा ड सोसा सान्टोज ने यूरोप में विद्रोहों, विषेशतया इंग्लैण्ड में, का विश्लेषण किया हैय जबकि अया फैब्रोस ने मलेशिया के एशियन प्रवासियों के अपने समुदायों का गठन करने का चित्रण किया है । गोहर शहनजरयान ने युद्ध से क्षतिग्रस्त दक्षिणि काकेशस की महिलाओं के संघर्ष के द्वारा पोस्ट–सोवियत पुनर्निमाण की चुनौतियों को सारभूत किया है। इन सब में यदि कोई समानता है तो वह है बेदखली, 'इडिग्नेडोस' की सुधार की पुकार।

वैश्विक संवाद ने वैश्विक समाजशास्त्र पर परिचर्चा में रेनाटो ऑट्रिज ने अंग्रेजी के आधिपत्य के प्रभावों के परीक्षण के रुप मे जारी रखा है जबकि अरी सिटास तथा सारा मोसोएटसा ने दक्षिणी अफ्रीका के लिए समाज विज्ञान और मानविकी का अपना चार्टर (charter) प्रस्तुत किया है । पीरु के निकोलस लिन्च और रोमानिया की मैरिएन प्रेडा और लिव्यु चैल्सिया ने परम्परागत दमनकारी शासनों के विरुद्ध समाजशास्त्रियों के संघर्षो का वर्णन किया है ।

संगठन के मोर्चे पर जैनिफर प्लॉट ने महिलाओं के आई.ए.एस. में बढते हुए समावेश के इतिहास की पुनर्गणना की है । एलीसा रीज तथा एन डेनिस ने दो गुंजायमान सम्मेलनों – दि ब्राजीलियन सोसियोलाजिकल सोसाईटी और महिला जगत पर अपने प्रतिवेदन दिये हैं जबकि एमा पोरियो का प्रतिवेदन प्रारम्भिक जीविकोपार्जक समाजशास्त्रियों पर है । हम आई.एस.ए. के एक महान मार्गदर्शक उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड को अपनी श्रद्धांजली भी दे रहे हैं।

शुरुआत में हमने वैश्विक संवाद को एक शालीन सूचना पत्र के रुप मे परिकल्पित किया था परन्तु अब यह तमाम आवश्यक मुद्धों, चाहे वे हमारे अपने विषय के हों या उससे परे, पर समाजशास्त्रिय की दृष्टि बन चुका है । यह ग्यारह भाषाओं में निकल रहा है – हमारे प्रबन्ध संपादकों और पूरे ग्रह पर फैले हुए हमारे अनुवादकों के दलों का असाधारण अदभुत कार्य । जो कल तक कल्पनातीत था आज डिजिटल तकनीकी ने संभव कर दिखाया है, जैसे कि आई.एस.ए. की कार्यकारिणि के सदस्यों का अन्तरउपमहाद्वीपीय साक्षात्कार । देखें : http://www.isa-sociology.org/journeys-through-sociology/

वैश्विक संवाद को फेसबुक तथा आई.एस.ए. की वैबसाइट पर भी देखा जा सकता है ।

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय 2

> असमानता और विरोध

वर्ग की वापसी 3

कोमतार के (गैर)नागरिक 6

व्यवस्था की अव्यवस्था 9

> अंतरराष्ट्रीय समाजशास्त्र पर परिचर्चा

– अंग्रेजी भाषा का आधिपत्य एवं समाज विज्ञान 11

> राष्ट्रीय समाजशास्त्र

– रोमानियन समाजशास्त्रः अपने पथरीले विगत से तेजी से उभरता हुआ 12

– पेरुवियन समाजशास्त्र के घुमाव तथा मोड़ 13

> उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड, 1924–2011

– नाईजीरिया में समाजशास्त्र के जनक 16

– आई.एस.ए. की पूर्व अध्यक्ष द्वारा व्यक्तिगत श्रद्धांजलि 17

> विशेष स्तम्भ

इतिहास का कोनाः महिलाओं का असमान समावेश 8

मानवाधिकारः दक्षिण काकेशस में पितृसत्ता को चुनौती 18

सार्वजनिक समाजशास्त्रः मानविकी और समाजशास्त्र का चित्रण 20

> प्रतिवेदन एवं सम्मेलन

आई.एस.ए. में प्रारम्भिक जीविकोपार्जक समाजशास्त्री 21

महिला जगत 22

ब्राजीलियन समाजशास्त्रीय समिति 23

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Associate Editors: Margaret Abraham, Tina Uys, Raquel Sosa, Jennifer Platt, Robert Van Krieken.

Consulting Editors: Izabela Barlinska, Louis Chauvel, Dilek Cindoglu, Tom Dwyer, Jan Fritz, Sari Hanafi, Jaime Jiménez, Habibul Khondker, Simon Mapadimeng, Ishwar Modi, Nikita Pokrovsky, Emma Porio, Yoshimichi Sato, Vineeta Sinha, Benjamin Tejerina, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World: Sari Hanafi and Mounir Saidani.

Brazil: Gustavo Taniguti, Juliana Tonche, Pedro Mancini, Fabio Silva Tsunoda, Dmitri Cerboncini Fernandes, Andreza Galli, Renata Barreto Pretulan.

India: Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Uday Singh.

Japan: Kazuhisa Nishihara, Mari Shiba, Yoshiya Shiotani, Kousuke Himeno, Tomohiro Takami, Nanako Hayami, Yutaka Iwadate, Kazuhiro Ikeda, Yu Fukuda.

Spain: Gisela Redondo.

Taiwan: Jing-Mao Ho.

Iran: Reyhaneh Javadi, Saghar Bozorgi, Shahrad Shahvand, Faezeh Esmaeili, Jalal Karimian, Najmeh Taheri.

Russia: Elena Zdravomyslova, Elena Nikoforova, Asja Voronkova.

Media Consultants: Annie Lin, José Reguera.

> वैश्विक असमानता :

वर्ग की वापसी

गोरान थॅबोर्न, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, यू.के., लीनियस विश्वविद्यालय, स्वीडन तथा योकोहामा में आई.एस.ए. की समाजशास्त्र की विश्व कांग्रेस की कार्यक्रम समिति के सदस्य।

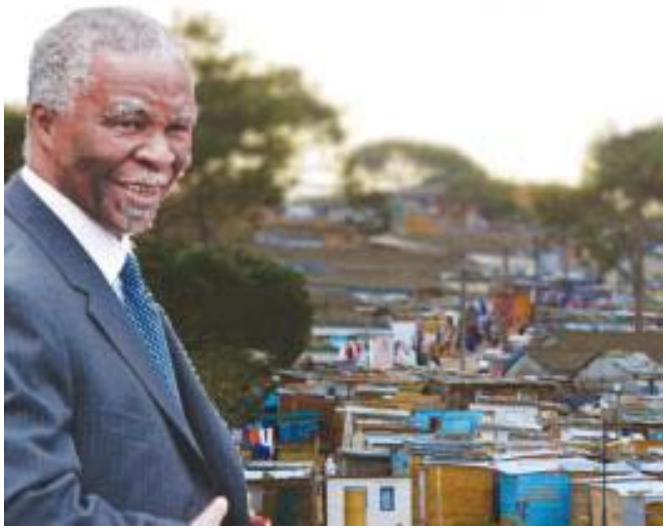

जोहॅन्सबर्ग में चारों तरफ फैली हुई गरीबी को पूर्व राष्ट्रपति मबैके दूर से देखते हुए

विश्व के गरीब देशों के लिए पिछले दो दशक अच्छे रहे हैं। 1980 के दशक के अन्त से अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठन की दृष्टि में एशिया विकास की दिशा की तरफ अग्रसर हो रहा है। विशेषतः चीन, भारत एवं एशियान देश विश्व के अन्य देशों की तुलना में दुगनी गति से विकसित हो रहे हैं। सन् 2001 में सब सहारा अफ्रीका, जो कि पिछली शताब्दी के अन्तिम तीन दशकों में विकास में सबसे अधिक पिछड़ा हुआ था, विश्व स्तर पर तीव्र गति से विकसित होता हुआ 'विकसित अर्थव्यवस्था' के निकट आ रहा है। सन् 2003 से लैटिन अमेरिका 'समृद्ध विश्व' की तुलना में तीव्र गति से विकसित हो रहा है। सन् 2000 से मध्य पूर्वी देश भी तीव्र गति से विकसित हो रहे हैं। उत्तर–साम्यवादी यूरोप को छोड़ कर 'उभार ले रही एवं विकासशील अर्थव्यवस्थाओं' ने समृद्ध विश्व की तुलना में कहीं अच्छे तरीके से पश्चिमी बैंकिंग उद्योग में पनपे संकट एवं उसके प्रभावों का मुकाबला किया है।

> राष्ट्र एवं वर्ग

न केवल भू–राजनीति में अपितु असमानता के क्षेत्र में भी हम एक ऐतिहासिक मोड़ का अनुभव कर रहे हैं। 19वीं एवं 20वीं शताब्दी में अल्प विकास का अन्तर्राष्ट्रीय विकास का अभिप्राय उस असमानता से हैं जो मनुष्यों के मध्य जहाँ वे रहते हैं कि आधार पर आकार लेती है अर्थात् विकसित अथवा अल्प विकसित क्षेत्र, भू भाग, राष्ट्र इत्यादि। हालांकि इस अल्प विकास की अवधारणा में अन्य अनेक कारक भी सम्मिलित हैं। सन् 2000 तक यह अनुमान लगाया गया कि परिवारों में आय असमानता का 80 प्रतिशत जिस देश में रहते हैं की स्थितियों पर निर्भर करता है (मिलानोविक 2011:12)। वर्तमान में यह स्थिति बदल रही है। अन्तर्राष्ट्रीय असमानता कुल मिला कर कम हो रही है। हालांकि समृद्ध एवं निर्धनतम के मध्य के अन्तर की वृद्धि रूक नहीं पा रही है। परन्तु अन्तरा–राष्ट्रीय असमानता कुल मिला कर बढ़ रही है। यह उतार चढ़ाव इस तर्क का निषेध करता है कि वैश्वीकरण या प्रौद्योगिकीय परिवर्तन निर्णायक वादी होते हैं। यह निर्णायक वादी चरित्र छद्म–सार्वभौमिक प्रकृति के अलावा और कुछ नहीं है।

यह स्थिति वर्ग की वापसी है जो असमानता के एक शक्तिशाली निर्धारक के रूप में वैश्विक स्तर पर उभरी है। वर्ग हमेशा से ही महत्वपूर्ण रहे हैं परन्तु 20वीं शताब्दी के सन्दर्भ में अनेक राष्ट्रीय वर्गीय संगठन एवं वर्ग संघर्ष तथा सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के कुछ नेटवर्क्स (अन्तःसम्बद्ध सम्पर्क केन्द्र) जो कि राष्ट्रीय वर्ग असमानता को व्यक्त करते थे, वैश्विक परिदृश्य पर उभरे अन्तर्राष्ट्रीय भेद के कारण कम महत्वपूर्ण होते गये। अब राष्ट्र विकास/वृद्धि की दृष्टि से नजदीक हो रहे हैं तथा वर्ग एक दूसरे से इस दृष्टि में अलग होते जा रहे हैं।

वैश्विक स्तर पर वितरण प्रतिमान का नया रूप वर्गीय समीकरण के अन्तर्गत् 1990 के दशक में महत्वपूर्ण बनने लगता है। यह ऐसा समय था जब पूर्व सोवियत संघ में पूंजीवादी रूझान के साथ चीन में व्याप्त असमानता की चर्चा उभार लेती है और भारत में (ग्रामीण) समानता के उभार के प्रयास पलट जाते हैं और ग्रामीण एवं नगरीय असमानता के

> >

पक्ष महत्वपूर्ण चर्चा बनने लगते हैं। लैटिन अमेरिका में, मैक्सिको एवं अर्जेन्टीना स्तब्धता के साथ नव्य उदारवादी असमानता के रूप का उभार देखते हैं। आई. एम. एफ. का एक अध्ययन (2007:37) दर्शाता है कि 1990 के दशक में वैश्विक स्तर पर आय की सहभागिता की दृष्टि से यदि किसी समूह ने उन्नयन किया तो वे समृद्ध राष्ट्रीय नागरिक/लोग थे फिर चाहे वे समृद्ध/उच्च आय वाले देशों के हों अथवा निर्धन/कम आय वाले देशों से सम्बद्ध हों। शेष अन्य लोगों की हर जगह आय कम हुई है हालांकि यह कभी बहुत तेज गति की नहीं थी।

आय वितरण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बदलाव सर्वोच्च शिखर पर स्थापित जनसंख्या के मध्य में हुआ। सर्वाधिक धनी जनसंख्या के 1 प्रतिशत एवं शेष तथा 0.1 प्रतिशत एवं शेष के मध्य यह अन्तर जानना जरूरी है। अमेरिका के नोबल पुरस्कार प्राप्त अर्थशास्त्री जोसफ

"...राष्ट्र नजदीक आ रहे हैं, और वर्ग दूर होते जा रहे हैं..."

स्टिग्लिट्ज ने हाल में यह मत व्यक्त किया है (वेनिटी फेयर मई, 2011) कि अमेरिका को उन 1 प्रतिशत सर्वाधिक धनाढ्य लोगों ने अधिकार में ले रखा है जिनके पास राष्ट्र के धन का कुल 40 प्रतिशत आधिपत्य में हैं, जो वार्षिक राष्ट्रीय आय के लगभग 25 प्रतिशत का संचालन/नियन्त्रण करते हैं तथा एक दृष्टि से अमेरिका की समूची कांग्रेस की रचना करते हैं। पिछली शताब्दी की समाप्ति के आस पास के दौर में सर्वाधिक धनाढ्य 1 प्रतिशत अमेरिकी नागरिक अमेरिका की आय के 15 प्रतिशत पर नियन्त्रण रखते थे जबकि भारत में यह जनसंख्या 9 से 11 प्रतिशत तक है जो यहाँ (भारत) की राष्ट्रीय आय के लगभग 15 प्रतिशत पर नियन्त्रण करती है (बनर्जी एवं पिकेटी 2003)।

अमेरिका की भाँति चीन, भारत एवं विकसित हो रहे एशिया में सामान्यतः असमानता मूलक प्रवृत्तियाँ उभार पर है। (लुयो एवं झाऊ 2008, कोचांगविझ एवं अन्य 2008, दत्त एवं रेविलान 2009)। उदाहरण के लिए भारत की तीव्र आर्थिक वृद्धि का कोई सकारात्मक प्रभाव भारत के बच्चों में 20 प्रतिशत सर्वाधिक गरीबों पर नजर नहीं आता। इन बच्चों में से दो तिहाई कम वजन के हैं जो उन्हें जीवन पर्यन्त कमजोर बनाती है। यह स्थिति सन् 2009 में विद्यमान थी और 1995 में भी यही स्थिति थी (यू एन 2011 : 14)। सन् 2000 के दशक में उभरी व्यापक अथवा गहन आर्थिक वृद्धि जो तृतीय विश्व का हिस्सा बनी, ने विश्व में व्याप्त भूख पर कोई प्रभाव नहीं डाला। कुपोषण की शिकार आबादी की संख्या 618 मिलियन से बढ़ कर 637 मिलियन हो गयी। दूसरे शब्दों में सन् 2000 से सन् 2007 के बीच विश्व की आबादी का कुल 16 प्रतिशत कुपोषण का शिकार रहा है (यू. एन. 2011:11)। भोजन की वस्तुएं लगातार कीमत वृद्धि का भाग बनी हैं। दूसरी ओर मार्च 2011 में फोर्ब्स पत्रिका सन् 2010 के डालर करोड़पति की संख्याओं में वृद्धि के तथ्य प्रस्तुत करती है। यह कुल संख्या 1210 है और इनकी कुल सम्पत्ति 4.5 ट्रिलियन (खरब) डालर है जो विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था जर्मनी के सकल घरेलू उत्पाद से भी अधिक है। अमेरिका, चीन एवं रूस में इन डालर करोड़पतियों की संख्या क्रमशः : 413, 115 एवं 101 है।

असमानता की यह वृद्धि, प्रौद्योगिकीय अथवा आर्थिक किसी भी रूप की हो, अपरिहार्य हो आवश्यक नहीं है। विश्व में विद्यमान सर्वाधिक असमानता मूलक आर्थिक क्षेत्रों में एक मात्र लैटिन अमेरिका ऐसा है जहाँ असमानता कम हुई है (सी ई पी एल 2010, यू एन डी पी 2010)। मुख्यतः ऐसा राजनीतिक प्रभावों से हुआ है (कॉर्निया एवं मैरोरानो 2010)। 1970 एवं 1980 के दशक में सैनिक तानाशाहों के द्वारा थोपी नव्य उदारवादी नीतियों का विरोध, धीरे धीरे लोकतान्त्रिक माध्यमों से चुन कर आने वाले नागरिक व उनके उत्तराधिकारी नेतृत्व, अर्जेन्टीना, ब्राजील, वेनेजुएला एवं अन्य राज्यों में जारी पुनर्वितरण की नीतियाँ और धनाढ्य अल्पतन्त्र द्वारा धन व सम्पत्ति के कब्जे जैसे पक्षों के कारण वर्ग संरचना के महत्व स्थापित होते जाते हैं। इन राजनीतिक प्रभावों को समझना जरूरी है।

वर्गों की तुलना विभिन्न देशों के संदर्भ में मापने का एक अन्य तरीका मानव विकास सूचकांक (एच.डी.आई.) है। इस तुलना में आय भी एक महत्वपूर्ण आधार है। मानव विकास सूचकांक में आय, जीवन सम्भाव्यता एवं शिक्षा सम्मिलित है। सूचकांक आधारित ये पक्ष अत्यन्त अर्थपूर्ण हैं पर इनमें त्रुटि की सम्भावना भी है। मानव विकास सूचकांक त्रुटियों के बावजूद विश्व असमानता की प्रस्तुति का मुख्य आधार है। अमेरिका की 25 प्रतिशत सर्वाधिक गरीब जनता की मानव विकास सूचकांक में स्थिति बोलीविया, इन्डोनेशिया एवं निकारागुआ के सर्वाधिक 25 प्रशित धनी लोगों की तुलना में निम्न है। अमेरिका की इस गरीब जनता का मानव विकास का स्तर ब्राजील एवं पेरू की 40 प्रतिशत जनता की तुलना में निम्न है। साथ ही उनका स्तर कोलम्बिया, ग्वाटेमाला एवं पैरागुअे के धनाढ्य 75 प्रतिशत लोगों के समकक्ष है। (ग्रिम एवं अन्य 2009, सारणी 1)

वर्ग वितरणमूलक न्याय के संदर्भ में यदि विवेचित किया जाय तो राष्ट्रीय आर्थिक सम्मिलन (नेशनल इकानॉमिक कन्वर्जेन्स) की बजाय अन्य कारकों के फलस्वरूप वर्गों का विस्तार हो रहा है। प्रजाति एवं लैंगिक प्रस्थिति से निर्मित असमानताएं हालांकि आज भी इधर उधर महत्व पूर्ण रूप में विद्यमान हैं पर स्पष्ट रूप से उनका व्यापक प्रभाव कम हो रहा है। हाल ही के वर्षों में उदाहरणार्थ दक्षिण अफ्रीका में संस्थागत प्रजातिवाद के बाद बड़े नाटकीय रूप से वर्गीय असमानता महत्वपूर्ण रूप से उभरी है। विश्व बैंक के प्रमुख अर्थशास्त्री ब्रेन्को मिलानोविक (2008 : साखी 3) एवं अन्य के अनुसार सन/ 1990 एवं 2000 के दशक में इस पृथ्वी पर आय की असमानता का गिनी कोफीशियेंट परिवारों के मध्य लगभग 65–70 के मध्य था। लेकिन सन् 2005 में जोहान्सबर्ग नगर में यह कोफीशियेन्ट 75 था, यह मापन उपभोग व्यय के आधार पर था जो आय मापन की तुलना में कम असमानता का आंकड़ा सदैव देता है (यू एन हैबिटाट 2008:72)। यदि त्रुटि की सम्भावना को स्वीकार भी कर लें तो यह कह सकते हैं कि प्रजातिवाद के उपरान्त के जोहान्सबर्ग नगर के निकटवर्ती क्षेत्रों में असमानता का स्तर उतना ही है जितना कि इस पृथ्वी पर निवास कर रहे अन्य निवासियों के मध्य एवं जोहान्सबर्ग में निवास कर रहे सामान्य नागरिकों के मध्य है।

वर्गों का यह सम्भावित उभार दो भिन्न प्रकार की दिशाओं में अवलोकनीय है। एक दिशा मध्य वर्ग की तरफ तथा दूसरी दिशा श्रमिक वर्ग की तरफ है। इस प्रत्येक दिशा में दो उपदिशायें भी विद्यमान हैं। मध्य वर्ग की एक दिशा में वैचारिक प्रमुखता के साथ वैश्विक मध्य वर्ग के रूप में उभार की आकांक्षा है। भूमि का स्वामित्व, कार की खरीद, एकल परिवार हेतु आवास, बिजली उपकरण एवं उपभोग की वस्तुओं पर व्यापक रूप में धन का व्यय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन पर व्यय के तत्वों के साथ यह वैश्विक मध्य वर्ग पटल पर आया है। यह वैश्वीकृत चरित्र एवं विकसित उपभोक्तावाद पारिस्थितिकीय चेतना वाले व्यक्तियों के लिए चिन्ता का विषय है पर इसके कारण व्यापारी, व्यापारिक प्रेस एवं व्यापारिक संस्थाओं के मध्य लाभ अर्जन का लोभ तीव्र हुआ है। मध्य वर्ग में पनपे उपभोक्तावाद के अनेक फायदे हैं। व्यापार में लाभ सबसे मुख्य फायदा है। धनाढ्य वर्ग के विशेषाधिकारों का इसके कारण समायोजन होता है और साथ ही अन्य वर्गों की आकांक्षाओं के स्तरों को नयी ऊंचाइयाँ मिलने लगती हैं। व्यापार के क्षेत्र में पनप रहे ये स्वप्न पूरे होने की सम्भावनाओं को नकारा नहीं जा सकता पर बढ़ रही आर्थिक दूरी एवं वचन की व्यापकता से उभर रहे सामाजिक असन्तोष

>>

की विस्फोटक उपस्थिति की उपेक्षा नहीं की जा सकती। दूसरे विकल्प की स्थिति यह है कि मध्य वर्ग एवं धनाढ्य वर्ग के मध्य बढ़ रही दूरी ने मध्य वर्ग को उपभोग के पूर्व राजनीति के स्पेस में प्रवेश दिया है। हाल के वर्षों में वह सब कुछ उभर रहा है जो 1848 के उपरान्त तो कम से कम यूरोपीय जनता ने अपने अनुभव का हिस्सा नहीं बनाया था। मध्य वर्ग सड़कों पर आन्दोलनरत है और मध्य वर्ग की क्रान्ति की चर्चा होने लगी है। मध्य वर्ग की आन्दोलन के रूप में यह सक्रियता सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से प्रतिक्रियावादी है। चिली में एलेण्ड का विरोध, वैनेजुएला में शावेज का विरोध या हाल में अमेरिका का 'टी पार्टी' प्रकरण इसके कुछ उदाहरण हैं। उदारवादी कल्पनाओं के विपरीत मध्यवर्गीय सक्रियता में कहीं भी लोकतान्त्रिक पक्षों के समावेश नजर नहीं आते। 2008 में थाईलैण्ड का 'येलो शर्ट' प्रकरण, चिली में सत्ता परिवर्तन के अचानक प्रयास एवं वैनेजुएला में सरकार गिराने की गोपनीय कोशिशें कुछ ऐसे ही साक्ष्य हैं।

मध्य वर्ग के अन्य विरोध प्रदर्शन अल्पतन्त्रीय शासन, क्रोनी पूंजीवाद एवं अल्पतन्त्रीय राजनीति के प्रति असहमति की अभिव्यक्ति हैं। उक्रेन में 'आरेन्ज रिवाल्यूशन' को आदर्श प्रारूप के निकट रखा जा सकता है। लेकिन सन् 2011 में 'अरब उभार' (अरब स्प्रिंग) को अत्यन्त महत्व पूर्ण एवं गम्भीर मध्य वर्गीय उभार के रूप में देखा जा सकता है। उच्च वित्त अथवा उच्च राजनीति तथा इससे जुड़ा एक प्रतिशत सर्वाधिक धनाढ्य का सर्वाधिक धनाढ्य के लिए राजनीतिक अर्थवाद वे कारक बने जिन्होंने मध्यवर्ग को आक्रामक बना कर ऐसा राजनीतिक आधार दिया जिसके परिणामों की भविष्यवाणी सम्भव नहीं है। वर्ग की एक अन्य दिशा श्रमिक वर्ग पर केन्द्रित है। औद्योगिक पूंजीवाद में निहित ऐतिहासिक हरावल दस्ते की भूमिका का युग समाप्त हो गया है साथ ही उनके विरोधियों के सबल पक्ष के दौर भी हाशिये पर चले गये हैं। मार्क्स की 19वीं शताब्दी के मध्य में सर्वहारा वर्ग के आन्दोलन की भविष्यवाणी का युग अब नहीं है हालांकि इस भविष्यवाणी के बाद यूरोप में व सबसे ऊपर 'नार्डिक देशों' में सर्वहारा आन्दोलनों ने मूर्त रूप लिया था। यूरोप व उत्तर अमेरिका में अब वि–औद्योगीकरण उभरा है। निजी वित्तीय पूंजी ने सार्वजनिक क्षेत्र के विकास को पीछे छोड़ दिया है। श्रमिक वर्ग अब न केवल विभाजित है अपितु वह पराजित तथा हताश है। परिणामस्वरूप उभरा आर्थिक ध्रुवीकरण एवं एक देश में पनपी (अन्तरा देशीय) असमानता के अवयव उत्तर अटलांटिक के वे योगदान है जिसने वैश्विक स्तर पर वर्गों को नव जीवन दे दिया है (वितरण की संरचनात्मक प्रणाली के रूप में)।

औद्योगिक सर्वहारा वर्ग का बहुत बड़ा भाग अब चीन में है क्योंकि विश्व में उत्पादन/निर्माण के सबसे बढ़े केन्द्र के रूप में चीन ने स्थान बनाया है। आज चीन में कार्यरत औद्योगिक श्रमिक अपने ही देश में बड़ी संख्या में अप्रवासी बन गये हैं। भिन्न भिन्न तरीकों से सक्रिय ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों से सम्बद्ध जन्म–अधिकार तथा धीरे धीरे समाप्त होने की तरफ अग्रसर इस अधिकार से सम्बद्ध 'हकाऊ प्रणाली' को अप्रवास की अवधारणा से जोड़ा जाता है। लेकिन चीन में औद्योगिक पूंजीवाद की वृद्धि के फलस्वरूप स्थानीय विरोधों एवं कीमतों में वृद्धि के विरूद्ध प्रदर्शनों में औद्योगिक श्रमिकों की वर्तमान में उपस्थिति उनकी शक्ति की परिचायक है (देखें पुन नगाई का 'ग्लोबल डायलाग' 1.5 लेख)। चीन की राजनीतिक सत्ता आज भी औपचारिक रूप में समाजवाद के प्रति एक स्तर तक प्रतिबद्ध है। भविष्य क्या होने वाला है का कोई भी अनुमान लगा सकता है। पर यूरोप से पूर्वी एशिया की तरफ बड़ी संख्या में विस्थापित औद्योगिक श्रमिकों के द्वारा संचालित वितरणमूलक प्रणाली हेतु संघर्ष का नया दौर ऐसा यथार्थ है जिसे उपेक्षित नहीं कर सकते।

वर्ग की स्थिति का चौथा पक्ष अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका में उपस्थित वर्गों एवं उनकी तुलना में समृद्ध विश्व में उपस्थित कम शक्तिशाली सम्बद्ध वर्गों की स्थिति एवं उनकी तुलनात्मक गतिशीलता व विविधता मूलक संरचना से जुड़ा है। साक्षरता से विकसित हो रहा सबलीकरण तथा संचार के नवीन साधनों के कारण इन उपस्थित व सक्रिय लोकप्रिय वर्गों के आन्दोलन विभाजन के अवरोध मूलक तत्व का सामना कर रहे हैं। नृवंशीयता, धर्म एवं विशेषतः औपचारिक एवं अनौपचारिक क्षेत्रों में रोजगार के साथ श्रमिकों की गतिविधियों का दूर दूर तक फैलाव (जैसे शारीरिक श्रम एवं सड़कों पर कार्य करने वाली विभिन्न गतिविधियों से जुड़े श्रमिक) श्रमिक आन्दोलन में विभाजन उत्पन्न करने वाले महत्वपूर्ण कारक है। लेकिन संगठन, सक्रियकरण एवं प्रदर्शनों को लेकर ये अवरोध या विभाजन मूलक तत्व इतने महत्वपूर्ण नहीं है कि इन्हें प्राप्त नहीं किया जा सके। स्व–रोजगार श्रमिकों का भारत में शक्तिशाली संगठन, जुलाई 2011 में थाईलैण्ड में मुख्य राजनीतिक शक्ति के रूप में 'रैड शर्ट' आन्दोलन के साथ जुड़े लोकप्रिय वर्गों की वापसी तथा ब्राजील एवं अनेक लैटिन अमेरिकी देशों में वामपन्थी दलों की सरकारों की रचना जो कि विभिन्न वर्गों के सहयोग के परिणाम है, इसके उदाहरण हैं।

उपरोक्त चारों वर्गीय उपागमों में से प्रत्येक विश्व असमानता को प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय विमर्श है। वैश्विक मध्य वर्ग में पनपा उपभोक्तावाद, मध्य वर्ग का राजनीतिक विद्रोह, औद्योगिक वर्गों के वर्गीय संघर्ष जिसमें विभिन्न वर्गों के मध्य सम्भावित समझौते के पक्ष शामिल हैं, के उभार यूरोप से चीन एवं पूर्वी एशिया में व्यापक रूप में अस्तित्व में आये हैं। चौथा पक्ष लैटिन अमेरिकी एवं दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों के आन्दोलनों के नेतृत्व के फलस्वरूप उभरा विषमरूपीय वर्गीय सक्रियकरण है जिसमें अरब देश एवं सब–सहारा अफ्रीका के देश भी सम्भवतया सम्मिलित हो रहे हैं (देखें एनरी कडल गारजा एवं एडवर्ड वैबस्टर का ग्लोबल डायलाग 1.5 में लेख)। भविष्य में उभरने वाली स्थिति को इन चारों वर्गीय प्रकृति के रास्तों को केन्द्र में रख कर समझा जा सकता है। इन सब की सापेक्षिक रूप की महत्वपूर्ण वास्तविकता से भविष्यवाणी करना सम्भव नहीं है अपितु इन साक्ष्यों पर बल व इनके अर्थ एवं महत्वों के मूल्यांकन अनेक विवादों को भी केन्द्रीय महत्व का बना सकते हैं। पर एक तर्क अत्यन्त स्पष्ट है कि राष्ट्र–राज्य शक्तिशाली संगठन बने रहेंगे एवं वर्ग संघर्ष राज्यों के अन्दर मुख्य उपस्थिति भी बनायें रखेंगे। साथ ही वैश्विक असमानता का नया उभार यह अर्थ देता है कि वर्गों का उभार होगा एवं मानव जीवन प्रणाली के निर्धारण में राष्ट्रों का महत्व कम होगा। ■

References

Banerjee, A., and Piketty, T. 2003. "Top Indian Incomes, 1956-2000", B R E A D working paper, http://ipl.econ.duke.edu/bread/papers.htm

CEPAL, 2010. *La hora de la igualdad*. Santiago de Chile, CEPAL.

Cornia, G.A., and Martorano, B. 2010. *Policies for reducing income inequality: Latin America during the last decade*. UNICEF Policy and Practice Working Paper. New York: UNICEF.

Datt, G., and Ravaillon, M. 2009. "Has India's Economic Growth Become More Pro-Poor in the Wake of Economic Reforms?", World Bank Policy Research Working Paper 5103, www.worldbank.org/

Grimm. M. *et al.* 2009. "Inequality in Human Development. An Empirical Assessment of 32 Countries", *Luxembourg Income Study*, Working Paper 519,

www.lisproject.org/publications/wpapers

IMF 2007. *World Economic Outlook*, October 2007. www.imf.org

Kochanowicz, J., *et al.* 2008. "Intra-Provincial Inequalities and Economic Growth in China", Faculty of Economic Sciences, University of Warsaw, Working Paper no. 10/2008. www.wne.uw.edu.pl

Luo Xubei and Zhu Nong 2008. "Rising Income Inequality in China: A Race to the Top", World Bank Policy Research Working Paper 4700. www.worldbank.org/

Milanovic, B. 2008. "Even Higher Global Inequality Than Previously Thought", *International Journal of Health Services*: 48:2.

Milanovic, B. 2011. *The Haves and the Have-Nots*. New York, Basic Books.

UN 2011. *The Millennium Development Goals Report 2011*. www.un.org/

UNDP 2010. *Regional Human Development Report for Latin America and the Caribbean*. www.undp.org

UN Habitat 2008. *The State of the World Cities 2008/9*. www.unhabitat.org/

> कोमतार के (गैर)नागरिक : मलेशिया में अन्तर–राष्ट्रीय प्रवासियों द्वारा अपने समुदायों का गठन

अया फेब्रोस, वैश्विक दक्षिण (ग्लोबल साउथ) पर केन्द्रित अध्ययन केन्द्र (फोकस ऑन द ग्लोबल साउथ) फिलीपीन्स से सम्बन्धित रिसर्च एसोसिएट।

प्रवासियों द्वारा पैनांग मलेशिया में पुनर्जीवित कर संचालित किया जाने वाला दुकानों का एक परिसर (शांपिग काम्पलेक्स) है जिसका नाम 'काम्पलेक्स तुन अब्दुल रजाक (KOMTAR) है। यहाँ अनेक विदेशी सैलानी आते हैं पर यह आपके लिए विशेष पर्यटन केन्द्र नहीं है जो वैश्विक की क्रूर अथवा सख्त तस्वीर को प्रदर्शित कर सके। विश्व के विभिन्न भागों की साफ सुथरी विभाजित/खण्डित टेपेस्ट्री (परदों) को यह परिसर प्रदर्शित करता है। यह विभाजन एक लिये गये क्षेत्र (स्पेस) में मिले जुले पक्षों के साथ व्यक्त होता है। सिंगापुर के लकी प्लाजा अथवा हांगकांग के विक्टोरिया पार्क की भांति कोमतार भी प्रवासी श्रमिकों के द्वारा समझौते करने के उपरान्त क्रिया कलापों को प्रस्तुत करता है। ये श्रमिक निवास करने वाले स्थानों में अपने लिए समायोजन के प्रयास करते हैं। वहीं पर अन्तर्राष्ट्रीय वास्तविकताओं से जूझते हैं तथा वैश्विक भेद–भाव के बीच अपने अस्तित्व की खोज करते हैं।

अपनी प्रतिष्ठा के विपरीत, आन्तरिक तन्त्र में कोमतार एक अन्दरूनी आदेश का पालन करता है और वह है प्रवासी श्रमिकों को उनके कार्य क्षेत्र में रोके रखने की नीति जिसमें विभिन्न प्रवासी समूहों को विभिन्न अनुभागों के निश्चित स्थलों पर, जिन्हें वे समूह रेखांकित कर लेते हैं, क्रियाएं करने की स्वीकृति मिलती है। प्रथम मंजिल के किसी एक अजीब कौने के गोपनीय से हिस्से में एक नेपाली केण्टीन (अल्पाहार गृह) नेपाली श्रमिकों को अवसर प्रदान करती है कि वे वहाँ मिलें, इस स्थल पर ये श्रमिक करी एवं मोमोज को खा सकें एवं काठमॉडू से प्रसारित संगीत को सुनते हुए शराब आदि का सेवन कर सकें। इस मुख्य इमारत की दूसरी मंजिल पर बर्मा से आये प्रवासियों के स्थल हैं, तीसरी मंजिल पर इण्डोनेशिया एवं उससे ऊपर की मंजिल पर फिलीपीन्स के प्रवासी श्रमिकों के ऐसे ही स्थल हैं।

ये सभी समूह अधिकांशतः स्वयं को अपने समूह तक सीमित करते हैं पर उन्हें यह चेतना रहती है कि अन्य समूह कहाँ हैं। एक स्वीकार्य पर अनकही प्रणाली इन समूहों के मध्य सक्रिय रहती है कि विभिन्न एशियाई वस्तुओं को कहाँ से प्राप्त करें। बाटिक एवं बगोंग (Batik and Bagong) कहाँ मिल सकते हैं, आंग सान सुइ की के विषय में नवीनतम समाचार हेतु बर्मा के प्रकाशन कहाँ उपलब्ध होते हैं इत्यादि की उन्हें जानकारी रहती है। हालांकि इन सब के लिए कोई सुनिर्धारित एवं स्वीकृत स्थान उस रूप में नहीं है। जैसे कि 'चायना टाउन' एवं 'लिटिल इण्डिया' के रूप में उपलब्ध हैं। जब एक बार आप चारों तरफ घूमते हैं तो ऐसे स्थलों में प्रवेश कर लेते हैं जो न केवल क्षेत्रीय है अपितु अन्तर्राष्ट्रीय भी हैं। इन स्थलों पर अन्तः क्रियाएं भौगोलिक/राष्ट्रीय सीमाओं के बाहर जाती हैं और सीमाओं की परिधि में भी रहती हैं। वैश्वीकरण के विभिन्न पक्ष उभरते भी हैं और वैश्वीकरण की प्रवृत्तियों की अस्वीकृति भी नजर आती है।

एक अनुमान के अनुसार मलेशिया में कार्यरत चार श्रमिकों में से एक श्रमिक विदेशी

पैनांग जिले में एक बार खरीददारी के प्रमुख केन्द्र के रुप में परिकल्पित कोमटार अवकाश, मनोरंजन और खरीददारी के लिए एक स्थानीय हब की चमक खोने के बाद भी एक मील का पत्थर बना हुआ है। अभी तक भी एक केन्द्रीय स्थान और पैनांग में सबसे ऊँची इमारत कोमटार आज भी एक वैश्विकृत अल्पसंख्यकों की बस्ती के रुप में उभर कर आ रहा है, अंतरराष्ट्रीय प्रवासियों के लिए क्षेत्र खोलने के लिए। फोटो – अया फैब्रोज

>>

(Pekerjasing) है। ये श्रमिक विभिन्न उद्योगों एवं बागानों में कार्यरत है। साथ ही सेवा क्षेत्रों एवं गृह कार्यों के क्षेत्र में भी ये श्रमिक कार्यरत हैं। इन श्रमिकों की संख्या अधिक है तथा मलेशिया की जनता इन पर विश्वास भी करती है, फिर भी इन प्रवासी श्रमिकों के महत्व व योगदान को कम आंका जाता है, इनकी उपेक्षा की जाती है और क्रियाशीलता के संदर्भ में ये अदृश्य ही रहते हैं। इन्हें केवल घूमने आये अथवा मिलने आये व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उन्हें नियोक्ताओं के साथ पूर्ण रूपेण सम्बद्ध कर दिया जाता हैं, श्रमिकों के संगठन भी सक्रियता दिखाते हैं 'वर्क परमिट' में इन प्रवासी श्रमिकों के नाम, कार्यस्थल, उद्योग एवं नियोक्ता के नामों को विशेषतः स्थान दिया जाता हैं। नियोक्ता को पूरा अधिकार है कि वह 'वर्क परमिट' से सम्बद्ध विभिन्न प्रमाणपत्रों एवं सम्बद्ध सूचना पत्रों को स्वीकारें अथवा अस्वीकृत करें। स्थानीय श्रमिक संगठनों की इसमें रूचि नहीं है। एक श्रमिक का मत था, 'वे (नियोक्ता) रोजगार की शर्तों एवं सम्बद्ध नियमों को लागू करने अथवा उन्हें रद्द करने का अधिकार रखते हैं, निर्देशित करते हैं, अपनी मनमर्जी के आधार पर श्रमिक को सेवा में रखते हैं और जब चाहें नौकरी से निकाल देते हैं, लेकिन हम नियोक्ता को अपनी मर्जी से नहीं चुन सकते, साथ ही हमें पता है कि हमारे साथ स्पष्टतया अन्याय और भेदभाव हो रहा है पर हम उन्हें अपनी मर्जी से छोड़ नहीं सकते।''

श्रमिक यह स्वीकारते हैं कि वे मलेशिया में रोजगार/श्रम की तलाश में आये हैं पर कुछ यह भी व्यक्त करते हैं कि उन्हें अपने क्षेत्रों में किसी भी प्रकार की स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं है (Parang Walang Laya) ऐसा लगता है कि अपने श्रम सम्बन्धी कृत्यों को करते हुए हम प्राचीन काल के दासों की तरह हैं। रोजगार की खोज हेतु दूर दराज के क्षेत्रों की यात्रा, उन श्रमिकों के लिए जो विदेशों से आते हैं, एक स्तर तक प्रतिबन्धित हो जाती है क्योंकि अनुमति लेनी पड़ती है साथ ही सीमित स्तर की स्वतन्त्रता दी जाती है। ये श्रमिक अपने कार्यस्थल से सम्बन्धित क्षेत्रों में ही आवाजाही कर सकते हैं अथवा/और उन्हीं स्थानों पर निवास करते हैं जो नियोक्ता ने प्रदान की है अथवा जिसका प्रबन्ध नियोक्ता ने किया है। इन श्रमिकों के लिए ऐसी स्थिति उत्पन्न की जाती है जहाँ वे शेष जगत से व्यवहार में लगभग पृथक हैं और इस कारण नियोक्ता एवं उसके प्रतिनिधियों/दलालों पर पूर्णतया आश्रित हैं। अनेक नियोक्ता एवं उनके प्रतिनिधियों को इन श्रमिकों के पासपोर्ट लेने में भी कोई संकोच नहीं होता। इन श्रमिकों को देश से निष्कासित करने की धमकी देकर पूर्ण रूपेण समर्पण की स्थिति हेतु एवं स्वर न खोलने तक के लिए बाध्य कर दिया जाता है। अनुशासन से लेकर समर्पण/आज्ञाकारिता, जिसमें भय उत्पन्न कर कार्य करवाना, आशा समाप्त होने के उपरान्त किसी भी प्रकार के (हिंसक) कार्य में संलग्न कर लेना एवं पृथक्करण के तत्व सम्मिलित हैं का परिवेश चूंकि उभार लेता है अतः प्रवासी श्रमिक लगातार अपने आपको उस स्थिति में पाता है जहाँ वह अपशब्द, शोषण, इत्यादि का अपने कार्य क्षेत्र एवं उसके बाहर अनवरत् शिकार होता रहता है।

बाहर के क्षेत्रों में लगाये गये प्रतिबन्धों के कारण कोमतार के क्षेत्र के अन्दर ये प्रवासी श्रमिक नागरिकता एवं एजेन्सी (अभिकरण) की अनुभूति करते हैं एवं उसकी पुनःचेतना/पुनः दावे का अनुभव करते हैं। इस क्षेत्र में वे ऐसे श्रमिक नहीं है जिन्हें अस्मिता से वंचित कर दिया गया है अथवा असेम्बली लाइन उद्योग में गैर महत्वपूर्ण के रूप में व्यक्त किया गया है अथवा दुकानों एवं परिवारों में जिन्हें श्रम करने के बावजूद हाशिये पर ही रखा गया है। इस क्षेत्र में तो वे या तो फिलीपिनी हैं, बर्मी हैं अथवा नेपाली हैं। वे 'अन्यों' के द्वारा अन्याय/शोषण के शिकार नहीं है। इस क्षेत्र में उन पर थोपी गयी वे अस्मितायें भी नहीं हैं जिनके माध्यम से बर्मी को 'महिला नौकरानी' और नेपाली को 'अवैध' के सम्बोध दिये जाते हैं। वे इस क्षेत्र में ग्राहक हैं जो अपनी रूचि के उत्पादन का प्रयोग करता है अथवा अपने कठोर श्रम से अर्जित पारिश्रमिक को अपने परिवार को भेजता है, एक दूसरे के साथ सहानुभूति एवं सहायता का भाव रखता है, अपनी दिन प्रतिदिन की संघर्ष पूर्ण जिन्दगी एवं राष्ट्रीय महत्व की प्रघटनाओं पर विचार विनिमय करता है। ये सभी सदस्य धार्मिक क्रियाओं एवं सामुदायिक समारोहों में सहभागिता करते हैं, अपनी क्रियाओं की भावी योजनाएं बनाते हैं अथवा इन क्रियाओं/कार्यक्रमों को स्थगित करते हैं साथ ही दिन प्रतिदिन की जीवन चर्या को अपनी चेतना का भाग बनाये रखते हैं। ये तत्व वे सामाजिक पक्ष है जो समुदाय की चेतना के भाव को स्वरूप प्रदान करते हैं।

न चाहने वाले परिवेश में सीमान्तता एवं 'गन्दा' एवं 'खतरनाक' जैसे, सम्बोध का लगातार सामना करने के बावजूद ये प्रवासी अपने 'स्थान' को लगातार अपने चेतना का हिस्सा बनाये रखते हैं यहाँ तक कि उन क्षेत्रों में भी यह चेतना जीवन्त रहती हैं जहाँ इन्हें लगातार निगरानी, नियमित छापों, हमलों, पुलिस दमन इत्यादि का सामना करना पड़ता है। इन सब के बावजूद दुकान मालिक इनके 'स्थान' को लगातार अर्थ प्रदान करते हैं, व्यापार में इनके बने रहने को महत्व भी देते हैं, क्योंकि 'अन्यथा ये (प्रवासी श्रमिक) फिर कहाँ जायेंगें'।

नीचे की मंजिल पर स्थित काफी घर में दो युवा पुरूष युनाइटेड नेशन्स हाइ कमीशन फॉर रिफ्यूजी' (यू एन एच सी आर) द्वारा प्रदान किये गये नवीन परिचय पत्रों की तुलना करते हैं साथ ही वे अपने एक अन्य सहयोगी का इन्तजार कर रहे हैं जो उन्हें 'आलोर स्टार' ले जायगा जहाँ पर नातेदारों एवं मित्रों को हिरासत में रखा गया है। ऊपर की मंजिल पर एक मेज को 'टांगिट्स' खेल को खेलने के लिए व्यवस्थित किया जा रहा है जबकि उससे अगले कमरे में एक फिलीपिनी घरेलू नौकर (डी एच) लकड़ी के कार्य में सक्रिय श्रमिकों (बढ़ई) द्वारा बनाये गये 'टाप ऑफ द वर्ल्ड' के प्रयासों में जो असफल नजर आते हैं, सहयोग कर रहा है।

कोमतार में लोग अनेक घण्टे गुजारते हैं एवं किसी भी वस्तु को खरीदने के इरादे के बिना भी यहां आते हैं। एक फिलीपिनी घरेलू नौकर का कहना है कि 'जब आप मलेशिया आते हैं तब आप अकेले हैं आपके साथ कोई भी नहीं है, कोमतार में आपको ऐसा अनुभव नहीं होता।'

यदि उपरोक्त संदर्भों के आधार पर चर्चा करें तो कोमतार प्रवासियों के लिए राजनीति का केन्द्र है। यहाँ बिखरे हुए श्रमिक लोग, जो अपने परिवारों एवं समुदायों से यहाँ आये हैं, एक दूसरे से मिलते हैं और पारस्परिकता की धारणा बनाते हैं। प्रवासियों की सामूहिक चेतना न तो यहाँ से बाहर जाती है और न ही समान प्रकृति के प्रयासों व योजनाओं की यहाँ से बाहर कोई प्रस्तुति होती है। परन्तु अपने अपने समुदायों में एक जुटता के स्तर की साझेदारी होती है, उसका विस्तार होता है एवं उसका क्रियान्वयन इस प्रकार होता है कि गैरनागरिकता की स्थिति से उत्पन्न हुए शून्य को भरा जा सके। बर्मा से आये प्रवासियों ने यहाँ 'स्वैच्छिक अन्तिम संस्कार/क्रिया सेवाओं' को प्रारम्भ किया है, चिकित्सालयी सहायताएं उपलब्ध कराने में सहयोग किया है एवं अपने संगठनों को औपचारिक स्वरूप भी दिया है। यह इसलिए किया गया क्योंकि ऐसे अनेक अवसर आये जब श्रमिकों को मूलभूत सेवायें उपलब्ध न होने के कारण विभिन्न क्रियाओं एवं अन्तिम क्रिया हेतु उन्हें विभिन्न स्त्रोतों/व्यक्तियों से धन को चन्दे के रूप में एकत्रित करना पड़ा। अन्य स्व–संगठित सहयोगी समूहों ने अपने उन सहयोगियों को सहायता पहुँचाने में भूमिका का निर्वाह किया है जो तनाव का शिकार हैं। इसके साथ ही ये समूह अपने सहयोगियों अर्थात् साथ के राष्ट्रीय लोगों के साथ अनेक सामाजिक–सांस्कृतिक उत्सवों का संचालन करते हैं।

कोमतार नियमित एवं स्थायी रूप से गतिशीलता एवं क्रियाओं का स्थल बन गया है। यहाँ हर सम्भावना विद्यमान है। किसी भी समूह को प्रत्यक्ष चुनौती दिये बिना ये प्रवासी श्रमिक जो कि क्रूर व गहरे शोषण व अन्याय का शिकार हैं अपना जीवन यापन करते हैं। वे अपने जीवन में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं और अनेक विपरीत स्थितियों का सामना करते हुए भी ऐसी कोई अभिव्यक्तियों नहीं देते जो उनके रोजगार एवं उनके वहाँ रहने/रूकने के पक्षों के लिए खतरा बने। वे इस स्थान पर 'एजेन्सी' की अनुभूति के दावों को पुनः स्थापित करते हैं और 'अपने यहाँ रहने/रूकने' को एक अधिकार के रूप में व्यक्त करते हैं। यह अभिव्यक्ति अपनी प्रतीकात्मक उपस्थिति एवं स्थानीय विशेषताओं को सम्मिलित कर की जाती है। यह एक यथार्थ है कि अनेक परोक्ष प्रकृति के प्रयासों द्वारा इनके मध्य समय समय पर भय/आतंक के उतार–चढ़ाव का माहौल बनता है जिसे ये सहते हैं। अब दिन प्रतिदिन की क्रियाओं, इहलौकिक कार्य प्रणालियों, सामुहिकता का समान अनुभव के माध्यम से बोध, संख्या के आधार पर सजगता एवं विरोधी स्थितियों के द्वारा या तो ये प्रवासी श्रमिक अदृश्यता एवं पृथक्करण इत्यादि को कम कर सकेंगे अथवा इसके अन्य परिणाम उभरेंगे। जैसे जैसे ये समुदाय अपने आधार खोजेंगे यह जानना बहुत आवश्यक होगा कि वे अपनी 'स्पेसेज' (क्षेत्रों) की रचना कैसे करेंगे, उन्हें विस्तार कैसे देंगे एवं उनके मध्य पनपी एकजुटता और उसकी अनवरत गहनता उन्हें कहाँ ले जायेगी। ■

राष्ट्रीय समितियाँ एवं शोध कमेटियाँ

जैनीफर प्लॉट, आई.एस.ए. के प्रकाशन अनुभाग की उपाध्यक्ष

हमारी 2010 की सदस्यों की नई निदेशिका के अन्तिम पन्नों को देखने से यह मालुम चलता है कि आर. सी. 32: समाज में महिलाए, 291 नामों के साथ सबसे बडी शोध समिति है । निश्चित ही यह महिलाओं के आन्दोलन के सामान्य प्रभाव को दर्शाता है साथ ही लैगिक मुद्धों की बौद्धिक समझ के महत्वपूर्ण विकास को भी जिसका नेतृत्व समाजशास्त्र ने किया है। हम कुछ सरल उपायों से उन मात्रात्मक परिवर्तनों को जो इसने आइ.एस.ए. के अन्दर प्रभावित किये है खोज सकते हैं।

कार्यकारिणि में किसी महिला का चुनाव सर्वप्रथम 1974 में हुआ था, 1978 में वह उपाध्यक्ष चुनी गयी और दो नई महिला सदस्याऐं भी शामिल हुई, और ये तीनो (17 या 18 में से) 1986 तक बनी रहीं जब ये पाँच बनी जिनमें से एक, और अभी तक केवल एक, मारग्रेट आर्चर पहली महिला अध्ययक्ष बनी। 1990 के दशक के अन्त तक 21 में से सात महिलाएं थी जिनमें एक उपाध्यक्ष भी थी, 2000 के दशक में 22 में से 8 – 10 महिलाएं थी, जिनमें कि दो या चार उपाध्यक्ष रहीं। यह दृष्टिकोण स्पष्टतः धीमी गति से लैगिक समानता को दर्शाता है, और महिलाओं की उच्च शिक्षा में बढती हुई भागीदारी इसका कारण हो सकती है।

लेकिन जिस प्रकार यह आइ.एस.ए. में हुआ उसे एक प्रतिमान नहीं कहा जा सकता । इसके पीछे विश्वव्यापी सामाजिक प्रक्रियाऐं हैं जिनके कारण महिलाओं नें समाजशास्त्र को अपनाया और आई. एस.ए. की सदस्यता ग्रहण की । 1976 की सदस्य सूची बतलाती है कि केवल 22 प्रतिशत साधारण सदस्य ही महिलाएं थी इस प्रकार उनकी कार्यकारिणि में 18 प्रतिशत की उपस्थिति को निम्न प्रतिनिधित्व नहीं कहा जा सकता, लकिन वे सीमित राष्ट्रीय पृष्ठभूमियों से आई थीं। शोध समितियों की कार्यकारिणियों मे जो थोडी सी महिलाएं 1970 के पहले सक्रिय थी, हम देख सकते है कि वे या तो ब्रिटिश थीं या फिर पूर्वी यूरोपियन्स्, जो बतलाता है कि राष्ट्रीय परिस्थितियां भिन्न थीं और तब तक कई देशों में समाजशास्त्र का संस्थानिकृत होना बाकी था।

मारग्रेट आर्चर, आई.एस.ए. की प्रथम महिला अध्यक्ष, 1986–1990

यद्यपि आइ.एस.ए. के अन्दर किसी सामाजिक श्रेणी का असमान वितरण केवल सीमित प्रभाव का ही हो सकता है । रिसर्च काउन्सिल में प्रत्येक आर.सी. का एक प्रतिनिधि होता है इसका मतलब है कि यदि महिलाएं (या किसी उप समूह के सदस्य) किसी आर.सी. में कम संख्या में इक्कठे हैं तो उनके प्रतिनिधि शायद कम संख्या में होगें बनिस्पत इसके अगर वे अधिक संख्या में विरलता से फैले हुए हों। इसी प्रकार महिलाएं अगर कुछ ही राष्ट्रों से ली गई हों तो उनका प्रतिनिधित्व कम होगा जहां कि एक राष्ट्र से एक प्रतिनिधि ही लिया जाना हो ।

आर. सी. 32 की अधिकतर सदस्य महिलाएं रही हैं । 2010 के नामों में जहां मैं उनकी लैंगिक पहचान कर पाई केवल 10 पुरुष हैं जो कि महिलाओं के मुकाबले में नगण्य हैं। यह लैंगिक संतुलन अन्य वर्तमान बडे समूहों में किसी और प्रकार का दिखलाई पडता है, जैसे कि 257 सदस्यों वाली आर. सी. 16: समाजशास्त्रीय सिद्धान्त में। समाजशास्त्रियों के विभिन्न क्षेत्रों के चयन में इस प्रकार के अभिलक्षित अन्तर और उनका विषय वस्तु से संबन्ध एतिहासिक अध्ययन में उनके द्वारा अभी तक प्राप्त होने वाले परिणामों की दृष्टि से विशेष तौर पर विपरीत लिंग के क्षेत्रों में और अधिक महत्व का है। ■

लंदन आग की लपटों में

> व्यवस्था की अव्यवस्था

बॉवेन्चुरा ड सोसा सान्टोज, अर्थशास्त्र पीठ, कोयम्ब्रा विश्वविद्यालय, पुर्तगाल, यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कोनसिन–मेडिसन लॉ स्कूल, यू. एस. ए. एवं सदस्य, कार्यक्रम समिति, आई. एस. ए. विश्व कांग्रेस, योकोहामा।

अपनी विशिष्टताओं के बावजूद लंदन और अन्य ब्रिटिश शहरों में होने वाले हिंसक दंगों को पृथक घटना के रूप में नहीं देखना चाहिए। ये हमारे समय के चिंताजनक चिन्ह हैं। समकालीन समाज में, परिवारों, समुदायों, सामाजिक संगठनों एवं राजनीतिज्ञों से अनभिज्ञ हमारे सामूहिक जीवन के नीचे एक अत्यन्त गंभीर विवाद उभरा है। यह गंभीर विवाद जब कभी उभर कर सामने आता है तो चिंतित कर देने वाली ऐसी घटनाएँ अस्तित्व में आती हैं जो समूचे सामाजिक ढांचे को उस स्तर की चुनौती देती हैं जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती। ये गंभीर विवाद चार अवयवों से मिलकर बनता है। सामाजिक असमानता और व्यक्तिवादिता दोनों को समर्थन, व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन का व्यापारीकरण, लोकतंत्र का अपहरण, विशेषाधिकार प्राप्त अभिजन जिसके आधार पर राजनीति को लूट के प्रबंधन में बदल दिया गया है और जिसकी ''वैधता'' नागरिकों से प्राप्त करने की कोशिशें की जाती हैं के परिणामस्वरूप तनाव का परिवेश उभरता है।

> >

यह प्रत्येक अवयव आन्तरिक विरोधाभास से ग्रसित है। जब ये एक दूसरे के ऊपर आती हैं तो कोई भी घटना विस्फोटक हो सकती है।

> असमानता और व्यक्तिवादिता

नवउदारवाद के साथ में, असमानता में क्रूर वृद्धि समस्या के बजाय समाधान बन गई है। अति धनाढ्यों की जीवन शैली का आडम्बरपूर्ण प्रदर्शन एक साक्ष्य के रूप में सफलता के उस सामाजिक प्रारूप को व्यक्त करता है जिसमें बहुसंख्यक जनता की निर्धनता की भर्त्सना है क्योंकि वे सफलता अर्जित करने के लिए प्रयासों को अधिक महत्व नहीं देते। सामान्यतः ऐसा आरोप अति धनाढ्य स्थापित करता है। यह सिर्फ इसलिए संभव हो सका क्योंकि व्यक्तिवादिता एक परम मूल्य बन गई है जो विरोधाभास से समानता के कल्पनालोक में जी जा सकती है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह इसका अभिकर्त्ता हो या लाभार्थी, सामाजिक सुदृढ़ता को समान रूप से रद्द कर देता है। ऐसा व्यक्ति असमानता को तभी समस्या मानता है जब वह उसके लिए प्रतिकूल हो। जब ऐसा होता है तो वह अनुचित कहलाता है।

> जीवन का व्यापारीकरण

उपभोक्ता समाज का अर्थ व्यक्तियों के मध्य सम्बन्धों को व्यक्तियों और वस्तुओं के मध्य के सम्बन्धों से बदलना है। उपभोग वस्तुएँ आवश्यकताओं की पूर्ति करने की बजाय उन्हें अंतहीन बनाती हैं। वस्तुओं में व्यक्तिगत निवेश उनके स्वामित्व या नहीं होने पर भी बराबर रहता है। शॉपिंग माल्स वस्तुओं से शुरू और उन्हीं पर खत्म होने वाले सामाजिक सम्बन्धों के जाल का एक भूतिया परिदृश्य प्रस्तुत करते हैं। हमेशा लाभ कमाने को आतुर पूंजी, अब उन बाजारी वस्तु के नियमों के अधीनस्थ आती हैं जिन्हें हमने बाजार में व्यापार करने हेतु हमेशा अति सामान्य (पानी, हवा) या फिर अति निजी (निजता, राजनैतिक विश्वास) माना है। इस बात में विश्वास करने कि पैसा एक सार्वभौमिक मध्यस्थ है और यह कि उसे प्राप्त करने के लिए कुछ भी किया जा सकता है, एक छोटा कदम भी है। शक्तिशाली रोज इस कदम को बढ़ाते हैं और उन्हें कुछ नहीं होता। उन्हें देखकर, दीन भी सोचते हैं कि वे भी ऐसा कर सकते हैं और जेल में पहुँच जाते हैं।

> सहनशीलता केन्द्रित नस्लवाद

इंग्लैंड में हुई अशांति में प्रारम्भ से ही नस्लवाद का आयाम था। ऐसा ही 1981 में भी सही था उसी समान जैसे 2005 के फॉल में पेरिस और अन्य फ्रेंच शहरों को हिलाने वाली अनिश्चितता में था। यह कोई संयोग नहीं है अपितु यह हमारे समाज में राजनैतिक औपनिवेशिकता के अंत होने के बावजूद विद्यमान औपनिवेशिक मिलनसारिता को दर्शाती है। प्रजातिवाद/नस्लवाद सिर्फ एक अवयव है, चूंकि भिन्न प्रजातियों के युवा दंगों में शामिल रहे हैं। परन्तु यह एक महत्वपूर्ण अवयव है क्योंकि यह सामाजिक अपवर्जन को आत्मसम्मान के क्षरण से जोड़ता है। हमारे शहरों में एक युवा अश्वेत व्यक्ति, चाहे वो कुछ भी करता हो, प्रतिदिन संदेह का अनुभव करता है। ऐसा संदेह भेदभाव से लड़ने वाली राजकीय नीतियों से ध्यान हटाने वाली, बहुसंस्कृतिवादी की कृत्रिमता एवं सहिष्णुता की हितैषिता वाले समाज में और अधिक जहरीला हो जाता है। जब हर कोई प्रजातिवाद को नकार देता है तो प्रजातिवाद के पीड़ित उसके विरूद्ध लड़ने के कारण नस्लवादी करार दिये जाते हैं।

> लोकतंत्र का अपहरण

वित्तीय बाजार और गुणवत्ता एजेन्सी द्वारा थोपे गये मितव्ययिता के उपाय के द्वारा नागरिक कल्याण के विनाश व इंग्लैंड में अशांति में क्या समानताएँ हैं? ये दोनों ही लोकतांत्रिक व्यवस्था को अनिश्चित परिणाम वाले तनाव परीक्षण को समर्पित करते हैं। दंगाई युवा अपराधी हैं परन्तु यहाँ प्रधानमंत्री डेविड केमरोन के अनुसार हम 'शुद्ध और सरल अपराधवाद' के समक्ष नहीं है। हमारे सामाजिक एवं राजनैतिक प्रारूप का हिंसक राजनैतिक सार्वजनिक विरोध है जो बैंकों को बचाने के लिए तो संसाधन जुटाता है लेकिन कोई उज्जवल भविष्य की संभावना रहित युवाओं को बचाने के लिए कुछ नहीं करता है। ये युवा एक बेहद महंगी शिक्षा के दुःस्वप्न में फँसे हैं जो कि बढ़ती बेरोजगारी के परिदृश्य में अप्रांसगिक हो सकती है। ये युवा, समुदायों द्वारा त्याग दिये जाते हैं जिन्हें असामाजिक सार्वजनिक नीतियों ने रोष, मानकशून्यता और विद्रोह के प्रशिक्षण शिविर बना दिया है।

"...वास्तविक उपद्रवी शक्ति के केन्द्र में हैं..."

नवउदारवादी श्रद्धा और शहरीय दंगाईयों में भयानक समानताएँ हैं। सामाजिक उदासीनता, घमंड त्याग की अनुचित हिस्सेदारी ने अव्यवस्था, हिंसा और डर के बीज बो दिये हैं। बीज बोने वाले यह लोग कल तर्क करेंगे कि जो उन्होंने बोया था, उसका हमारे शहरों को सता रही अव्यवस्था, हिंसा और डर से कोई सरोकार नहीं है। वास्तविक उपद्रवी शक्ति के केन्द्र में हैं; शीघ्र ही शक्तिहीन द्वारा उनका अनुकरण किया जायेगा ताकि राजनैतिक शक्ति में व्यवस्था की वापसी संभव हो सके। ■

> अंग्रेजी भाषा का आधिपत्य एवं सामाजिक विज्ञान

रेनाटो ओरट्रिज, कैम्पीनास का राज्य विश्वविद्यालय, ब्राजील

अंग्रेजी वैश्वीकरण की आधिकारिक भाषा है। मैं इसे आधिकारित इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि अन्य भाषाओं की उपस्थिति हमारे समकालीन स्थिति का हिस्सा बनती है। ऐसा तब भी है जब एक भाषा अन्य के उपर विशिष्ट स्थान/विशेषाधिकार/दर्जा प्राप्त करती है। भाषाई सम्पत्ति के इस वैश्विक बाजार में अंग्रेजी वैश्विक आधुनिकता की भाषा बन जाती है। इसका सामजिक विज्ञानों के लिए क्या तात्पर्य है?

मैं बौद्धिक बहस में पाई जाने वाली दो सामान्य स्थितियों से बचना चाहूँगा। एक तरफ तो यह दृष्टिकोण है कि अंग्रेजी साम्राज्यवाद का पुरावशेष (artifact) है। मैं साम्राज्यवाद को समकालीन वैश्वीकरण की प्रक्रिया को समझने के लिए उपयोगी अवधारणा नहीं मानता। दूसरी तरफ यह विचार है कि राष्ट्रीय पहचान स्वयं की भाषा को अन्य नकली भाषाओं की तुलना में अधिक प्रामाणिक बनाता है। सोसर के अनुसार, प्रतीकों का मनमानापर क्षेत्र व इतिहास के सन्दर्भ से जुड़ा होता है। कोई भी भाषा दूसरी भाषा से श्रेष्ठ नहीं होती। वे सिर्फ वास्तविकता को विशिष्ट रूप में बयां करती हैं।

समकालीन बहस में एक घिसा पिटा कथन है कि अंग्रेजी वैज्ञानिक समुदाय की ''लिंग्वा फ्राँका'' है। परन्तु यह 'लिंग्वा फ्राँका' क्या है? एक ऐसी भाषा जिसे वैज्ञानिकों के बीच संपर्क को अधिकतम करने के उद्देश्य से अपने एकाधिक अर्थों से खाली कर दिया हो। यह प्राकृतिक विज्ञानों में आंशिक रूप से संभव है परन्तु सामाजिक विज्ञानों में अंग्रेजी लिंग्वा फ्राँका के रूप में कार्य नहीं कर सकती। यह राष्ट्रीय गौरव का प्रश्न नहीं है बल्कि ज्ञान–निर्माण की प्रक्रिया के गुण के कारण है।

समाजशास्त्रीय वस्तु का निर्माण भाषा के माध्यम से होता है। भाषा का चयन आकस्मिक नहीं बल्कि अंतिम परिणाम को ध्यान में रखकर लिया जाने वाला एक निर्णायक पहलू है। अतः प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञानों के व्यवहार में अंतर है। यहाँ मैं कुछ उदाहरण देना चाहूँगा। प्राकृतिक विज्ञानों में ग्रंथ प्रस्तुत करने का न सिर्फ एक निश्चित क्रम होता है बल्कि यह विशिष्ट कथनात्मक विवरण का उपयोग करता है। यह प्रथम पुरूष व सामान्य तौर पर वर्तमान काल में लिखे जाते हैं। उदाहरण के लिए जीवविज्ञानी लिखते हैं: विकिरण की खुराक तीन स्ट्रिप्स को चित्रित करती हैं या उत्परिवर्तन अपने आप को सेन्ट्रीपीट्ली/प्रस्तुत करता है। इसमें क्रिया वर्तमान काल में है और प्रथम पुरूष के प्रयोग से, वैज्ञानिक की अनुपस्थिति में वार्ता को वस्तुनिष्ठता प्रदान होती है। सामाजिक विज्ञानों के ग्रंथों में से कथनाकार को हटाया नहीं जा सकता इसलिए सी. राइट मिल्स ने सामाजिक विज्ञानों को बौद्धिक शिल्प कहा है। कथनाकार 'मैं' या 'हम' हो सकता है पर लेख प्रथम पुरूष तक सीमित नहीं हो सकता। हम चाहे 'मैं' या 'हम' का प्रयोग करें कथनात्मक विवरण में मध्यस्थ हमेशा होता है। एक समस्या अनुवाद की भी है जो कि शब्दों तक ही नहीं बल्कि दो विशिष्ट भाषाओं में बराबर संदर्भ ढूंढने की है। अनुवाद की प्रक्रिया में भिन्न बौद्धिक परम्पराओं को ध्यान में रखना चाहिए। 'राष्ट्रीय प्रश्न' की संज्ञा को हम राष्ट्रवाद नहीं कह सकते हैं। राष्ट्रीय प्रश्न से आशय एक विशिष्ट राजनेतिक संदर्भ से है, जिसमें विशिष्ट लेटिन अमरीकी बौद्धिक बहस भी सम्मिलित है–वह संदर्भ जिसमें राष्ट्रीय पहचान की समस्या, आधुनिकता का निर्माण, विदेशी विचारों को आयात करने की आलोचना, उपनिवेशी देशों में हीनता का भाव और परिधीय (peripheral) आधुनिकता की दुविधा निहित है।

यह एक सम्पूर्ण ग्रंथ सूची एवं कलात्मक परम्परा–मेक्सिकन म्यूरलिस्ट से ब्राजीलियन आधुनिकता की तरफ संदर्भित है। 'राष्ट्रीय प्रश्न' लेटिन अमरीकी देशों द्वारा अपनी पहचान को खोजने के इतिहास से जुड़े रहने का एक शार्टहैण्ड उपाय है। यह वैसा नहीं है जैसा की राष्ट्रवाद।

तथापि, इन सब बाधाओं के बावजूद भी सामाजिक विज्ञानों में अंग्रेजी का प्रभुत्व कायम है। कुछ वैश्विक वैज्ञानिक शैलियों में अंग्रेजी के पक्ष में चाकबंद हैं। इसका एक उदाहरण डाटाबेस के उपयोग से है जिसका निर्माण विभिन्न कारक जैसे तकनीकी कारक, कीमत एवं बाजार वितरण से निर्धारित होता है। ग्रंथों एवं उद्धरणों को संयोजित करने के लिए भाषाई रजिस्टर की आवश्यकता होती है। जब हम वैज्ञानिक जगत का असली चित्र प्रस्तुत करना चाहते हैं तो यह रजिस्टर न्यून एवं छिपा हुआ होता है। द इन्स्टीट्यूट आफ साइन्स इन्फोरमेशन (आई. एस. आई.) चार भिन्न प्रकार के सूची पत्र तैयार करता है जिसमें प्रत्येक किसी भाषाई विकृति से चिन्हित है। 1980 से 1996 के बीच में सोशल साइन्स साइटेशन इण्डेक्स डाटाबेस में सभी लेखों में से 85%-96% अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित सामग्री थी। अगर हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि वैाानिक सत्ता/रौब के लिए उद्धरण आवश्यक है तो यह भाषाई बहिष्करण पर आधारित एक स्पष्ट संस्तरण को इंगित करता है। डाटाबेस के निर्माण, वैज्ञानिक रिपोर्ट एवं पुस्तकों के प्रकाशन में अंग्रेजी का चयन बाजार का प्रश्न है। बड़े कार्पोरेशन (रीड एलेसेवियर, वॉल्टर्स क्लूवर) अंग्रेजी के विश्व बाजार पर हावी हैं क्योंकि इन ग्रंथों के संचलन में सुगमता है। इस तरह के मनमाने भाषाई मानदण्ड विज्ञान निर्माण (या विज्ञान को करने) की वैश्विक वैधता का आधार बनते हैं। यह मनमानापन डिजीटल तकनीक (पी.डी.एफ. व संदर्भ सूची में ग्रंथ) के माध्यम से पुनः स्थापित होता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद का असमान वितरण भी इसके लिए उत्तरदायी है। यू.एस.ए. और यू. के. में अनुवादित लेख (सभी प्रकार के) कुल प्रकाशित लेखों का 5 प्रतिशत भी नहीं होते। स्वीडन और नेदरलैण्ड जैसे देशों में यह संख्या तकरीबन 25 प्रतिशत और ग्रीस में 40प्रतिशत है। अन्य शब्दों में, जितनी कोई

> >

भाषा केन्द्र में होगी उतना ही कम उस भाषा में अनुवाद होगा। आखिर कार, प्रासंगिकता की कोई बात उसके बाहर मौजूद हो नहीं सकती।

यदि सामाजिक विज्ञानों में अंग्रेजी 'लिंग्वा फ्राँका' के रूप में कार्य नहीं कर सकती तो इसकी प्रभुता का क्या अर्थ है? मेरी यह धारणा है कि अंग्रेजी ने अपने सर्वव्यापी गुण से वैश्विक स्तर पर बौद्धिक बहस को निर्देशित करने की क्षमता का विकास कर लिया है। यहाँ निर्देशित करने से तात्पर्य मुद्दों की विस्तृत श्रृंखला में से उन मुद्दों के चयन से है जो कि प्रासंगिक और गोचर हैं। अन्य शब्दों

> "...अंग्रेजी 'लिंग्वा फ्राँका' के रूप में कार्य नहीं कर सकती..."

में कहा जाए, अंग्रेजी भाषा में बौद्धिक बहस को तराशने की शक्ति है। अभी इनके और तात्पर्य भी है। आई.एस.आई. के संस्थापक यूजीन गारफील्ड ने कहा कि 1970 में फ्रेंच विज्ञानों की एक कमजोरी थी–वे प्रांतीय हो रहे थे क्योंकि फ्रेंच में लिखा जा रहा था। इस बहस के अनुसार सार्वभौमिकता अंग्रेजी का गुण है जबकि प्रातीयता अन्य सभी भाषाओं को परिभाषित करती है। वैश्विक अंग्रेजी अब सार्वकालिक अंग्रेजी बन जाती है। हालाँकि यह भूल जाते हैं कि महानगरीयतावाद वैश्वीकरण की प्रक्रिया का गुण नहीं है। विशिष्टवाद, जहाँ स्थानीयता में प्रांतीय भाषा के रूप में प्रकट होता है, वहीं यह समकालीन वैश्वीकरण के पारिभाषिक लक्षण के रूप में भी प्रकट होता है। वैश्विक आधुनिकता की शर्त के तहत वैश्विक प्रांतीय होना बिल्कुल सामान्य और स्वीकार्य है। ■

> रोमानियन समाजशास्त्र : अपने पथरीले विगत से तेजी से उभरता हुआ

मैरिएन प्रेडा और लिव्यु चैल्सिया, बुखारेस्ट विश्वविद्यालय, रोमानिया

माईकल बुरावे के सार्वजनिक समाजशास्त्र के व्यावसायिक, विवेचनात्मक, नीतिपरक वर्गीकरण के बारे मे यदि एक पेशेवर नजरिये से सोचा जाये तो कहा जा सकता है कि रोमानिया में समाजशास्त्र नीतिपरक समाजशास्त्र के रुप में मजबूत है और बाकी तीनों स्थानों पर जहां कि वह कमजोर समझा जाता है अब उन्नति कर रहा है। रोमानिया में समाजशास्त्र पहली बार 19वीं शताब्दि के अन्त में पढाया जाने लगा था। तथाकथित बुखारेस्ट सामाजिक स्कूल (अन्तःविषयक और मुख्य रुप से प्रजातिलेखकीय) के रुप में इसका विकास युद्ध की अवधि में हुआ। समाजशास्त्र की एक विश्व कॉंग्रेस जिसका कि बुखारेस्ट में आयोजन होना निश्चित हुआ था द्वितिय विश्वयुद्ध के शुरु होने के कारण रद्ध कर दी गई थी। 1948 में समाजशास्त्र को प्रतिबन्धित किया गया, जिसे फिर 1966 में पुर्नस्थापित किया जा सका परन्तु 1977 मे पुनः प्रतिबन्धित किया गया। 1989 के तदुपरान्त बहुत से समाजशास्त्र विभागों की स्थापना हुई और तब से हजारों छात्रों नें अब तक समाजशास्त्र मे बी.ए., एम.ए, और पीएच.डी. की उपाधियां प्राप्त की हैं।

पिछले दो दशकों के दौरान रोमानियन समाजशास्त्र नें देश को तीन श्रम मंत्री, एक प्रधान मंत्री, दो हाऊस ऑफ डिप्टीज के स्पीकर, बहुत से लोकसभा सदस्य और उच्च स्तरीय राजनैतिक सलाहकार दिये हैं । कई राजनैतिक विश्लेषकों, पत्रकारों, सर्वेक्षण कंपनियों, उच्चस्तरीय प्रबन्धकों ने अपने पेशे में समाजशास्त्रीय सकारात्मक सार्वजनिक अनुभवों का योगदान दिया है। इतना सब कुछ होने के बावजूद भी अन्तरराष्ट्रीय समाजशास्त्र से रोमानियन समाजशास्त्र की सहलग्नता अभी हाल ही तक प्राथमिकता में नहीं थी। जब तक 2010 की आई.एस.ए. की गोथेनबर्ग की वर्ल्ड कॉंग्रेस जिसमे कि 30 से अधिक रोमानियन समाजशास्त्री उपस्थित थे, रोमानिया की अन्तरराष्ट्रीय घटनाओं मे उपस्थिति कम ही रहती थी। ऐसा लगता है कि यह एक व्यापक प्रवृति का हिस्सा है –– एक दस्तावेज जो कि एक संदर्भ सेवा (एस.सी.ईमेजो) ने तैयार किया है, के अनुसार रोमानियन समाज विज्ञान के 1966 के वैश्विक उत्पादन में 0.02 प्रतिशत से 2008 में 0.15 प्रतिशत और 2010 में 0.44 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है। (http://www.scimagojr.com/countrysearch.php?area=3300&country=RO&w=).

कुछ शीर्ष अन्तरराष्ट्रीय समाजशास्त्रीय पत्रिकाओं (जैसे कि करंट सोसियोलाजी और सोसियल फोर्सेज) में रोमानियन समाजशास्त्रियों की कभी–कभार उपस्थिति के अलावा दूसरी नई प्रवृति उभरी है कि नये समकक्ष विद्वानों द्वारा समीक्षा किये गये जनरल्स बनाए जाएं जिनका अन्तरराष्ट्रीय स्तर हो । इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ सोशल रिसर्च (www.irsr.eu), जिसका आगमी विषेश अंक पर्यावारण समाजशास्त्र, भौतिकवाद और वैश्विक दक्षिण में उपभोग, सामाजिक अर्थशास्त्र, जीवन शैली और पर्यटन आदी विषयों पर केन्द्रित है एक उदाहरण के रुप मे देखा जा सकता है। इसमें जीन–क्लाड कॉफमन, माईकल रेडक्लिफ, और जिग्मट बॉउमैन जैसे प्रमुख सामाजिक विचारक एवं रिचर्ड हेन्डलर और डैनियल मिलर जैसे मानवशास्त्रियों के योगदान शामिल हैं।

रोमानियन समाजशास्त्रियों के संगठन से समाजशास्त्रियों के एक बडे समूह जिसमें कि शैक्षणिक और व्यवहारिक समाजशास्त्री विश्वविद्याालयों तथा निजी अनुसंधान संस्थानों से थे ने सन् 2008 में एक नए पेशेवर संगठन रोमानियन सोसियोलाजिकल सोसाईटी (आर.एस.एस.) का गठन किया (http://societateasociologilor.ro/en)। जिसकी सदस्य संख्या अब 400 से अधिक है। आर.एस.एस. की पहली कॉन्फ्रेन्स जो कि क्लज–नैपोका में 2010 में ''समाज की पुर्नरचना: जोखिम और एकता'' (http://cluj2010.wordpress.com/) विषय पर आयोजित की गई थी में लगभग 200 प्रतिभागी आये थे। जहां एक तरफ देशान्तरण, संस्थानों, नगरीय मामलों, सामाजिक समस्याऐं, सामाजिक मनोविज्ञान जैसे त्वरित विषयों पर चिन्तन किया गया वहीं सामाजिक मुल्यों, पद्धतिशास्त्रीय सर्वेक्षण और उत्तर–सामाजिक परिवर्तनो के अध्ययन में भी रुचि प्रदर्शित की गई ।

दूसरी कॉन्फ्रेन्स ''वैश्विकरण से परे?'' जून 2012 में आयोजित होगी तथा इसके लिए प्रस्तुतियां सितंम्बर 2011 के मध्य से आमंत्रित की जानी हैं । अधिक जानकारी के लिए कृप्या निम्न वैबसाइट पर देखें http://www.societateasociologilor.ro/en/conferences/conference2012.

इस कॉन्फ्रेन्स में पिछले तीस वर्षों के दौरान उन एतिहासिक चक्रों जिनसे कि समाजशास्त्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं का लेखाजोखा लेने का प्रयास रहेगा। कुछ युगान्तरकारी घटनाओं (जैसे कि 9/11 और वैश्विक वित्तिय संकट) के अलावा इस कॉन्फ्रेन्स में नवउदारवाद और वैश्विकरण की उन प्रवृतियों जिनमें से कुछ धुंधली पड गयी है और वह जो डटे रहने वाली हैं का भी अन्वेषण किया जाएगा। ■

> पेरूवियन समाजशास्त्र के मोड़

निकोलस लिंच, सॅन मार्कोस का राष्ट्रीय विश्वविद्यालय एवं पेरू के पूर्व शिक्षा मंत्री।

वर्त्तमान समय में पेरूवियन समाजशास्त्र एक वैज्ञानिक विषय और पेशे के रूप में विद्यमान है। फिर भी यह अभी पूर्ण रूप से संस्थागत नहीं है और इसमें मान्यता और प्रभाव की कमी है। पेरू में समाजशास्त्र का विकास 4 चरणों में से होकर गुजरा है : सामाजिक मुद्दों की चिंता, समाजशास्त्र एक पेशेवर व्यवसाय के रूप में, गैर सरकारी संगठनों में समाजशास्त्र का ह्रास और विवेचनात्मक समाजशास्त्र की वापसी।

> सामाजिक चिंताएँ

बीसवीं शताब्दी के शुरूआत से पेरू में सामाजिक मुद्दों के प्रति चिंता ने बौद्धिक अनुचिंता को प्रेरित किया है। तथापि, उस समय, इसने ज्यादातर देश के समक्ष निर्णायक मोड़, उनको चित्रित करने के प्रयास और पेरू के उद्विकास, विकास और रूपांतरण की दिशा के बारे में निदानात्मक निबंधों का रूप लिया। इस शुरूआती दौर के विचारकों ने पेरू के बारे में पहली बार महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने शुरू कर दिये। इनमें रूढ़िवादी दक्षिण पंथ से सम्बन्धित व्यक्तियों जिन्होंने प्रभुत्वशाली कुलीनतंत्र की स्थिति के बारे में मत प्रस्तुत किया और साथ ही सुधारवादी एवं क्रांतिकारी वामपंथी जिनमें महान बुद्धिजीवी उभरने लगे थे सम्मिलित थे। दक्षिण पंथियों में महत्पूर्ण नाम थे–जोस दी ला रीवा अगुयुरो, फ्रांसिस्को गार्शिया कालेडेरॉन एवं विक्टर अन्द्रेस बेलॉण्डे; वामपंथीयों में मेनुअल गोंजालेज प्रादा, विक्टर राल हाया दे ला टोरे एवं जोस कार्लोस मरियादेग्युई थे।

इस काल के दौरान, विशेषतः 1896 में समाजशास्त्र सॅन मार्कोस विश्वविद्यालय के डिपार्टमेण्ट ऑफ लेटर्स में एक विषय के रूप में उभरा। विषय में रूप में, यह राष्ट्रीय मुद्दों के विश्लेषण में सापेक्षिक रूप से हाशिये पर

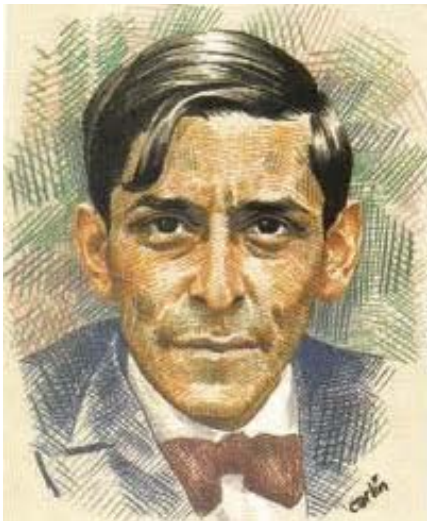

जो कार्लोस मारियाटेगुई, 1894–1930

था। अपितु, विषय ने काम्ट और स्पेन्सर द्वारा उद्धरत तत्वों के अनुरूप सामाजिक विकास की सैद्धान्तिक व्याख्या को विकसित करने का प्रयास किया। यह बड़े कौतुहुल का विषय है कि प्रथम अवस्था में सामाजिक चिंताओं और समाजशास्त्र के विश्लेषण में बहुत कम संपर्क था पर इन सब के बावजूद आने वाले दशकों में पहला दूसरे के विकास के लिए केन्द्र बन जायेगा।

> समाजशास्त्र का एक पेशे के रूप में विकास

हाल ही 1961 में, सॅन मार्कोस विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना के साथ ही, पेरू में समाजशास्त्र एक पेशे के रूप में उभरा है। कुछ वर्ष पश्चात् 1964 में, कुछ ऐसा ही पोटिंफिक कैथोलिक विश्वविद्यालय में हुआ, जहाँ समाज विज्ञान पीठ की स्थापना के साथ ही समाजशास्त्र मुख्य विषय के रूप में स्थापित हुआ। दोनों ही स्थापनों पर विदेशी सहयोग एवं प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण रहा। सॅन मार्कोस विश्वविद्यालय को युनेस्को से और कैथोलिक विश्वविद्यालय को डच सरकार से वित्तीय सहायता प्राप्त हुई। अकादमिक समाजशास्त्र के इस शुरूआती दौर में ''विशिष्ट सामाजिक समस्याओं को सुलझाने'' के विचार के साथ टेक्नोक्रेटिक मोड़ बहुत महत्वपूर्ण था।

तथापि, छात्र आंदोलनों से प्रभावित मार्क्सवाद के आगमन एवं लेटिन अमेरिका के वामपंथी विचारों के वेग, जिसने विवेचनात्मक सोच को बढ़ावा दिया, के फलस्वरूप यह टेक्नोक्रेटिक समाजशास्त्र परिवर्तित हो गया।

वह समय सैनिक क्रांति द्वारा राष्ट्रवादी, वामपंथी सरकार के आगमन का भी था जिसने तानाशाही तंत्र होने के बावजूद समाजशास्त्रियों के लिए उपलब्ध नौकरियों की संख्या में विस्तार किया। यह 1968 का वर्ष था, जो कि पूरे विश्व की तरह ही, पेरू के लिए भी महत्वपूर्ण वर्ष था। आने वाले दशकों में, कम से कम 1990 के नवउदारवादी प्रतीपगमन/निकासी/रिग्रेशन तक, तो इस परिवर्तन ने समाजशास्त्र को क्रांतिकारी पहचान दिलवा दी। मार्क्सवादी प्रभाव ने पूर्वगामी टेक्नोक्रेटिक अभिमुखन को एक तरफ कर, समाजशास्त्र को समाज के क्रांतिकारी परिवर्तन की सेवा के लिए प्रस्तुत किया। 1970 के दशक के दौरान,नये अभिमुख एवं बेहतर/उन्नत श्रम बाजार ने पेरू में समाजशास्त्र को शिखर पर ला दिया। उस समय के दौरान न सिर्फ विभिन्न विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र को मुख्य विषय के रूप में अपितु विभिन्न राज्य संस्थाओं में समाजशास्त्रियों को नियुक्ति भी दी गई जिससे सैन्य सरकार के सुधारों को गति मिली। विशेषतः राजनैतिक क्षेत्र एवं देश में पूंजीवादी विकास के निरूपण के सम्बन्ध में समाजशास्त्रीय शोध में कई महत्वपूर्ण

> >

घटनाक्रम हुए। इस व्यवसाय ने एक नये पेशे के रूप में परिवर्तन के एक युग की भावना को व्यक्त करते हुए, एक विशिष्ट दर्जा प्राप्त किया।

मार्क्सवाद का आकर्षण सिर्फ इसके वैश्विक परिप्रेक्ष्य में ही नहीं बल्कि इसलिए भी था क्योंकि यह बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशकों के समाजशास्त्र के अग्रदूत की तरफ लौट रहा था, विशेषतः जोस कार्लोस मारियाटेगुई की कृतियाँ जो नये संस्करणों में प्रकाशित हुई। उसकी विरासत/संपदा पर विवाद खड़ा हुआ जिसमें पेरू के समाजशास्त्री सीजन जर्माना और अर्जनटाइन जोस ऐरिको, जो कि स्वयं पेशेवर समाजशास्त्री नहीं होने के बावजूद एक केन्द्रिय हस्ती थे, ने महत्वपूर्ण हस्तक्षेप किये। फिर भी विवेचनात्मक सोच के रूप में मार्क्सवाद का सीमित प्रभाव रहा। हालांकि कुछ प्रगति हुई, विशेष रूप से अनिबाल क्वीजानों के निर्देशन में, सोसियेडाड वाय पोलिटिका (Society and Politics) की पत्रिका में 1970 के दशक के दौरान के सैन्य शासन का अविस्मरणीय विश्लेषण किया गया। 1980 के दशक में मानवशास्त्री कार्लोस इवान डेग्रिगोरी द्वारा निर्देशित परन्तु सम्पादकीय समिति, जिसमें अधिकतर समाजशास्त्री थे, के द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका अल जोरो दि अबाजों भी महत्वपूर्ण थी। इस सम्पादकीय समूह का एक सदस्य, सिनेसियो लोपेज विशेष रूप से प्रभावशाली था। अंटानियो ग्राम्शी के फ्रेमवर्क/ढाँचे को प्रयोग में लाते हुए, उनके कृत्यों ने राज्य के विकास और नवोदित सामाजिक आंदोलनों की विशेषताओं को समझने के लिए रोचक तरीके की पेशकश की। जूलियो कोटलर द्व ारा मार्क्सवाद और वेबर की सोच का दुलर्भ मिश्रण प्रस्तुत किया गया जिसमें राष्ट्र–राज्य के निर्माण एवं देश में कुलीनतंत्र शक्ति की वैधता की कमी पर केन्द्रित किया गया। 1978 में अपने मौलिक प्रकाशन के बाद उनकी मुख्य कृति, Clases, Estado y Nacion en el Peru के कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

मार्क्सवाद का दूसरा पक्ष जो कि समाजशास्त्र और पेरू के सामाजिक विज्ञानों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण साबित होगा, मार्क्सवाद लेनिनवाद था। यह हठधर्मी (dogmatic) मार्क्सवाद साम्यवाद आंदोलनों के माओवादी खण्ड के बढ़ते प्रभाव, जो कि 1970 व 1980 के दशकों में सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में बहुत शक्तिशाली था, के साथ साथ उभरा। हठधर्मी मार्क्सवाद सामाजिक विज्ञानों के पाठ्यक्रम को पुनर्गठित करना चाहता था ताकि सभी प्रोफेसर जिनकी ग्रंथ सूची पूर्व यू. एस. एस. आर. अकेडमी

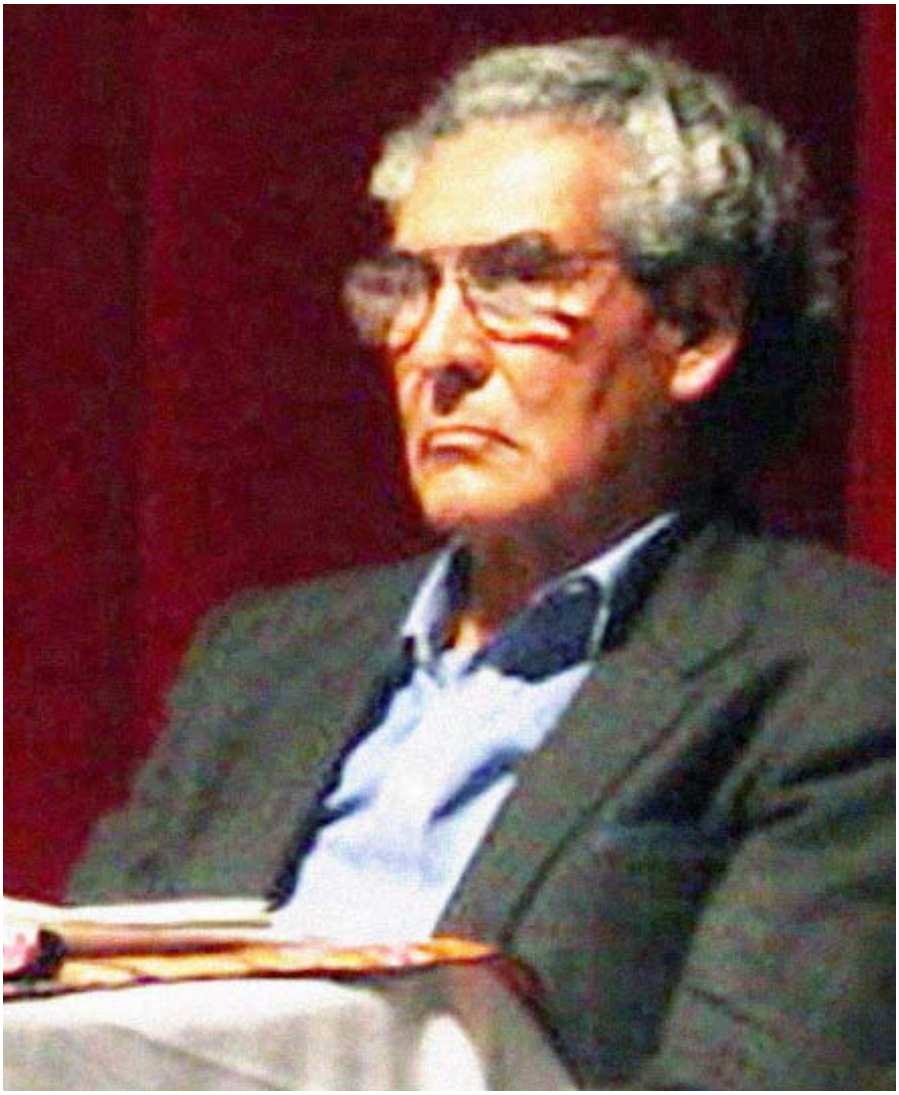

अनिबाल क्वीजानों

ऑफ साईन्स के मैनुअल तथा मार्क्स, लेनिन और माओं के चुनिंदा कृत्यों तक ही सीमित थी, राजनैतिक रूप से आसक्त हो जाए। इस हठधर्मी मार्क्सवाद का बौद्धिक प्रभुत्व पेरू में हाने वाली राजनैतिक हिंसा के कई वर्ष जिसमें माओवादी समूह सेनडेरो लुमिनोसो के विद्रोह से देश में 12 वर्ष तक आन्तरिक युद्ध एवं करीब 70000 मौतें हुई, के साथ संयोगवश आया। इस रूपांतरण ने देश में समाजशास्त्र को मौत के कगार पर ला दिया जिससे इसकी पेशेवर ज्ञान एवं सार्वजनिक संस्थाओं में प्रभाव में कमी आई और इसे बौद्धिक स्तर पर हाशिये पर ला दिया। कई सार्वजनिक और निजी विश्वविद्यालयों ने समाजशास्त्र को मुख्य विषय के रूप में हटा दिया। यह अब सिर्फ दो मूल केन्द्रों सॅन मार्कोस विश्वविद्यालय और कैथोलिक विश्वविद्यालय में गुणात्मक रूप में विद्यमान रहा। विषय के गिरावट के साथ ही पेशेवर समाजशास्त्रियों की भी पदावनति हुई और अस्तित्व की व्यक्तिगत चुनौतियाँ भी सामने आईं।

> गैर–सरकारी संस्थाओं में समाजशास्त्र का क्षय/अपकर्ष

1980 और 1990 के दशकों के दौरान, गैर सरकारी संस्थान पेशेवर समाजशास्त्र के लिए आश्रय का एक महत्वपूर्ण स्थल बन गये थे। गैर सरकारी संस्थान आश्रय के महत्व पूर्ण स्थल इसलिए बन गये क्योंकि ये दशक आन्तरिक युद्ध (1980 के दशक में) और फिर उसके बाद अलबर्टो फुंजीमोरी (1990 का दशक) के नवउदारवादी तानाशाही के थे। इस युग में वामपंथ के साथ और उससे भी खराब क्रान्ति के साथ समाजशास्त्र की पहचान, विषय के खिलाफ चली गई।

समाजशास्त्रियों की मांग, सर्वाधिक सार्वजनिक क्षेत्र में, तेजी से घट गई और साथ ही कई विश्वविद्यालयों ने जिनमें समाजशास्त्र पढ़ाया जाता था, समाजशास्त्र के अध्यापन के लिए अपने दरवाजे बंद कर लिए।

> >

समाजशास्त्रियों ने लघु विकास परियोजनायें एकत्रित कर और अन्तर्राष्ट्रीय मददगारों से वित्तीय सहायता प्राप्त कर गैर–सरकारी संस्थानों का गठन कर लिया। इस तरह के कार्य ने कई समाजशास्त्रियों को सामाजिक आवश्यकताओं से जुड़ी कार्य विधा में पेशेवर रूप से विकसित होने में कदद की। तथापि, इसने समाजशास्त्र को महान चिंतकों से वंचित कर दिया जिससे इसके बौद्धिक विकास की संभावनाएं सीमित हो गईं। जब वित्तीय सहायता ज्यादातर बहु–स्तरीय संस्थाएँ जैसे विश्व बैंक इत्यादि से आने लगी और उन्होंने तथाकथित ''वाशिंगटन कॅनसेन्सस'' को लागू करने पर जोर दिया तब यह बात और भी सही साबित हो गई। इस तरह की सोच के प्राधान्य ने विवेचनात्मक सामाजिक श्रेणियों के ''सब–आलर्टरनाइजेशन'' (subalterization) का आगाज किया। इसका सबसे अच्छा उदाहरण असमानता के संवर्ग का गरीबी के संवर्ग से प्रतिस्थापन है।

सकारात्मक दृष्टि से, 1990 के दशक में पेरू के समाजशास्त्रियों का पेशवर संघ, द कॉलेज ऑफ पेरूवियन सोशियोलोजिस्ट का गठन हुआ। यह कॉलेज समाजशास्त्रियों के लिए एक संदर्भ बिंदु के रूप में विकसित हुआ है। यद्यपि यह अभी विकसित हो रहा है, पर इस कॉलेज ने पेशेवर समाजशास्त्रियों को एकजुट करने व उनकी नये क्षेत्रों एवं गतिविधियों में समाजशास्त्र के प्रयोग की दक्षता को प्रमाणित करने का कार्य किया है।

> लोकतंत्र की वापसी के तहत समाजशास्त्र

सन् 2000 में पेरू में लोकतंत्र की स्थापना और लेटिन अमेरिका में वामपंथ की तरफ झुकाव के संयोग के सांस्कृतिक और राजनैतिक दोनों ही परिणाम थे। सामाजिक विज्ञानों (विशेषतः समाजशास्त्र) के विकास के अवसर बाकी सभी जगह खुल गये लेकिन पेरू में ऐसा कम हुआ क्योंकि यहाँ लोकतंत्र वामपंथ के झुकाव के साथ नहीं आया (कम से कम वर्ष 2011 के नवीनतम चुनाव तक)। 1990 के दशक के टेक्नोक्रेटिक मोड़ और विवेचनात्मक समाजशास्त्र के बीच तनाव अपनी जगह पर, बिना किसी समाधान के दृष्टिगत, बरकरार है।

विरोधाभास में, शैक्षणिक चर्चाओं में, टेक्नोक्रेटिक अभिमुखन समाजशास्त्र को प्राकृतिक विज्ञानों के विस्तार के रूप में रक्षात्मक रूख अपनाता है। अतः विवेचनात्मक समाजशास्त्र बौद्धिक वचनबद्धता के प्रभाव क्षेत्र तक ही सीमित रह जाता है। पिछले 15 वर्षों में स्नातक कार्यक्रमों, दोनों स्नातकोत्तर एवं डाक्टरेट, में नये विचार विकसित तो हुए है। तथापि 1970 के शुरूआती दौर में विश्वविद्यालयों में मुख्य विषय के रूप में तेजी से बढ़ोतरी के समान ही इन कार्यक्रमों की गुणवत्ता अनियमित रही है। फिर भी नगरीय समाजशास्त्र, संस्कृति एवं लिंग भेद (जेण्डर) विषयों पर कई रोचक शोध डाक्टोरल थीसिस व मास्टर थीसिस के रूप में हुए हैं। मार्क्सवाद–लेनिनवाद की हठधर्मी छाप दफनी हुई और दुबारा उठने में असमर्थ जान पड़ती है।

यद्यपि, यहाँ इमेनुअल वालरस्टीन से प्रेरित, अनिबाल क्वीजानों द्वारा उद्धरत एक नये आदर्श ''शक्ति की उपनिवेशता'' (coloniality of power) का उल्लेख करना आवश्यक है। इस समालोचना को जोस कार्लोस मारियाटेग्बुई के कार्य का विस्तार समझा जाता है। क्वीजानो तर्क देता है कि पेरू मेट्रोपोलिस द्व ारा लेटिन अमेरिका पर थोपा गया एक प्रकार के पूंजीवाद में सहभागिता करता है और उन्हें स्थायी सहायक की भूमिका के लिए बाध्य करता है। राष्ट्र–राज्य के पुराने प्रतिमानों के आधार पर, राज्य अपने तथाकथित नागरिकों की पहचान नहीं कर पाता है और यूरोसेन्ट्रिक मूलतः उद्धविकासीय, दृष्टि बनाये रखता है। यह समालोचना यह सुझाव देती है कि आधुनिकीकरण या मार्क्सवाद–लेनिनवाद विकास लाने में असपफल रहे हैं। इस संदर्भ में क्वीजानों इस क्षेत्र का वैश्विक दक्षिण में स्थित होने के प्रस्ताव पर सोचने के लिए जोर डालता है ताकि इसके निवासियों की पहचान पुनः प्राप्त किया जा सके और राजनैतिक एवं आर्थिक विकास के नये स्वरूपों का निर्माण हो सके। यह विश्व के इस भाग को दी जाने वाली स्वायत्तता के संदर्भ में और भी महत्व पूर्ण है। क्वीजानो के अलावा भी कई लोगों ने इस क्षेत्र के पुनः निर्माण के लिए कार्य करना शुरू कर दिया है; पद्धतिशास्त्र में सीजर जर्माना; राजनीति, विशेषकर नागरिकता पर सेनिसियो लोपेज; शिक्षा और संस्कृति पर गोंजालो पोर्टोकरेरो एवं पेड्रो पाबलो तथा लेटिन अमेरिका में वामपंथी अभिमुखन पर अलबर्टो अद्रियान्जेन।

> निष्कर्ष

पेरू के समाजशास्त्र का अकादमिक और पेशे के रूप में सीमित विकास हुआ है। चिंतन की प्रभुत्वशाली सोच अभी अपरिपक्व है और व्यक्तिगत बौद्धिक व्यक्तित्व में निवास करती है। इसका संस्थागत विकास अभी प्रारंभिक स्तर पर विश्वविद्यालयों में शिक्षक तक ही सीमित रहा है। विषय से सम्बन्धित कोई महत्वपूर्ण शोध केन्द्र या फिर विभिन्न शैक्षणिक विषयों को एकजुट करने वाली शोध परियोजना भी नहीं है। फिर भी पेरूवियन समाजशास्त्र ने 1980 और 1990 के दशकों में मार्क्सवाद–लेनिनवाद की हठधर्मिता और नवउदारवाद के कारण उत्पन्न समाजशास्त्र के विनाश की धमकी पर विजय पा ली है।

इन धमकियों से उबरने के फलस्वरूप यह विशिष्ट शोध क्षेत्रों में पुनः उभरी है और पेशेवर ज्ञान के कोने विकसित किये हैं। परन्तु सबसे महत्वपूर्ण बात है कि आज भी यह अपने आप को विवेचनात्मक ज्ञान के रूप में पोषित करती है। यदि पेरूवियन समाजशास्त्र नवोदित संदर्भों का लाभ उठाती है तो यह क्षेत्रीय स्वायत्ता के नये स्वरूप और पूर्ण लेटिन अमेरिका के लिए नये प्रकार के विकास के तरीके ढूंढ सकती है। ये तरीके राजनीति और संस्कृति में प्रगतिशील अभिमुखन से चिन्हित हो सकते हैं। यहाँ नये विकास और विभिन्न क्षितिजों की संभावनाएँ छिपी हुई है। ■

> उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड, 1924–2011, नाइजीरिया में समाजशास्त्र के जनक

अयोदेले सेमुअल जेगेडे, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, इबादान तथा आई. एस. ए. सदस्य।

उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड की यादगार, फोटो – अयोदेले सेमुअल जेगेडे

नाइजीरिया में समाजशास्त्र के जनक उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड (1924–2011) अब नहीं रहे। 87 वर्षीय हिमेलस्ट्रान्ड का निधन 8 जून को उनके गृहनगर स्वीडन के उपासला में हुआ। हिमेलस्ट्रान्ड का जन्म व बाल्यकाल का बड़ा हिस्सा भारत में व्यतीत हुआ जहाँ उनके पिता स्वीडन के चर्च में मिशनरी थे। उनकी स्कूली शिक्षा स्वीड़न में हुई। इस कारण से उन्हें दोनों देशों में कुछ हद तक सीमांत प्रस्थिति प्राप्त हुई। अकादमिक निर्णयों के संयोग उन्हें ऐसे विदेशी वातावरण में ले गया जहाँ सामाजिक अवरोध क्रियाशील थे। बियाफ्रान युद्ध के दौरान नाइजिरिया और 1960 के छात्र आंदोलन के दौरान केलिफोर्निया। इन अनुभवों ने निश्चित तौर पर उनके समाजशास्त्र पर प्रभाव डाला।

नवोदित विद्वान के रूप में, हिमेलस्ट्रान्ड ने 1960 में अपनी पीएच. डी. थीसिस, ''सामाजिक दबाब, मनोवृत्तियाँ एवं लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं'' खत्म की। इस उपलब्धि के पूर्व वे उपासला विश्वविद्यालय में लेक्चरर थे, जहाँ वे फिर सहायक प्रोफेसर (1960–1964) और बाद में इबादान विश्वविद्यालय, नाइजिरिया में प्रोफेसर एवं अग्रणी समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष बनें।

1960 में नाइजीरिया की स्वतन्त्रता एवं उसके कुछ वर्षों तक, नाइजिरिया में समाजशास्त्र का कार्यक्षेत्र नगण्य था। यह इबादान विश्वविद्यालय और न्सुक्का स्थित नाइजिरिया विश्वविद्यालय में पढ़ाये जाने वाले उपनिवेशी सामाजिक मानवशास्त्र में कुछ पाठ्यक्रम के अतिरिक्त कुछ नहीं था।

केनिथ डिके, इबादान विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति द्वारा विश्वविद्यालय को विश्व–स्तरीय बनाने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली रणनीति के तहत उनकी योजना सामजिक मानवशास्त्र को अनोपवेशिक (decolonize) करना तथा विश्वविद्यालय में स्तरीय समाजशास्त्र की स्थापना करना था। रॉकफेलर फाउण्डेशन की टीम के साथ कार्य करते हुए केनिथ डिके ने उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड नाम के 40 वर्षीय समाजशास्त्री को इबादान विश्वविद्यालय के पूर्ण विकसित समाजशास्त्र विभाग का प्रथम अध्यक्ष बना दिया।

अगस्त 1964 में उनके आगमन से पूर्व, इन्होंने स्वीडन एवं श्री लंका में शोध के कारण अपने लिए जगह बना ली थी। वे इबादान में दो विशिष्ट विद्वान, फ्रांसिस ओलू ओकेदिजि एवं एल्बर्ट इमोहियोसेन से मिलने के लिए पहुँचे। ब्रिटिश सामाजिक मानवशास्त्री, रूथ मूर्रे एवं अमरीकी सामाजिक मनावैज्ञानिक पॉल हेर भी सम्मिलित हुए। उन्होंने पीटर लॉयड जो कि अर्थाशास्त्र से अलग होने के बाद 1960 तक इस उप–विभाग के अध्यक्ष थे, से कार्यभार ग्रहण किया। समाजशास्त्रीय विद्वता में उन्होंने उत्कृष्टता की नींव डाली। हिमेलस्ट्रान्ड के पास पीटर इकेह और स्टीफन इमोयजीन (अब विख्यात प्रोफेसर) उनके प्रथम स्नातकोत्तर छात्र के रूप में थे।

उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड ने समाजशास्त्र के अध्ययन के लिए अनेकों छात्रों को आकर्षित किया। उन्होंने पाठ्यक्रम को अनोपवेशिक किया और नाइजिरियाई संस्कृति के प्रति सम्मान रखने वाली मुख्यधारा के समाजशास्त्र का निर्माण किया। इबादान में अपने पहले ही साल में, उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड विश्वविद्यालय के लिए अंतर्राष्ट्रीय शोध कार्यक्रम एवं विशाल कोष (funding) लाने में सफल हुए। 1965 के ग्रीष्मावकाश के दौरान राजनैतिक संस्कृति पर शोध विषय पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें यू. एस. ए., लेटिन अमेरिका, यूरोप और एशिया के विख्यात सामाजिक वैज्ञानिक जिसमें शोध कार्यक्रम के प्रणेता, सिडनी वर्ना (स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय) और राबर्ट सोमर्स (केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले) इबादान में एकत्रित हुए। उस शोध के नाईजिरियन पक्ष के अध्यक्ष हिमेलस्ट्रान्ड थे और यह नाइजिरिया का पहला वृहद सामाजिक विज्ञान शोध कार्य था। 1965–67 में श्रेत्र अध्ययन के दौरान देश के सभी क्षेत्रों का अध्ययन किया गया। खुशी की बात है कि बडे शोध करने की यह परम्परा इबादान में समाजशास्त्र विभाग में आज भी पाई जाती है।

उन्होंने कई युवा विद्वानों को मार्गदर्शन दिया जो आज विश्व भर में प्रख्यात हैं। सर्वप्रथम इस ज्ञानी (erudite) स्वीड द्वारा प्रोफेसर पीटर इकेह, स्टीफन इमोयजीन, एकनडायो एकेरेडोलू–एले, सेमसन ओके, सिमी अफोन्जा, एडेसूवा इमोवोन, मार्टिन इगबोजूरिके एवं लायी एरिनोशो निखारे गये। तदोपरांत प्रोफेसर एडिगुन अगबाजे और एग्होसा ने उनके साथ एक पुस्तक के अफ्रीकन परस्पेटिव्स ऑन डेवलपमेंट (1994) के सृजन पर कार्य किया।

अग्रणी समाजशास्त्री होने के नाते अपने चुने हुए क्षेत्र में उन्होंने गहरा प्रभाव डाला। वे अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्री परिषद (आई.एस.ए.) के अध्यक्ष (1978–1982) रहे और 1978 में उन्होंने अपने गृहनगर उपासला में आई.एस.ए. की विश्व कांग्रेस के आयोजन को सुनिश्चित किया।

अपने निधन तक वे एक अफ्रीकी, एक सिद्धान्तवादी (विचारक), प्रत्यक्षवादी और कुछ हद तक सामाजिक मनोविज्ञान का फोकस लिए एक मार्क्सवादी भी थे। हिमेलस्ट्रान्ड एक पहुँचे हुए विद्वान थे। उन्होंने कई जिंदगियों को छुआ और विश्व को प्रभावित किया। 1989 में उपासला विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रोफेसर एमिरेट्स बन गये। 12 जुलाई को उन्हें उनके गृहनगर में दफना दिया गया। उनकी आत्मा को पूर्ण शांति प्राप्त हो। ■

> उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड को व्यक्ति श्रद्धांजलि

मार्गेट आर्चर, वारिक विश्वविद्यालय, यू.के. एवं आई.एस.ए. की पूर्व अध्यक्ष (1986–90)

8 जून, 2011 को उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड के निधन के साथ ही समाजशास्त्र जगत ने अपना एक सबसे सज्जन और समर्पित दोस्त खो दिया। उनके लिए वैश्वीकरण महज एक अवधारणा या कारण नहीं थी बल्कि एक ऐसा एहसास था जिसे वे जीते थे। उन्होंने कभी भी अपनी जीवनी दूसरों पर नहीं थोपी। उनके समर्पित समर्थन के साक्ष्य हमें उन लोगों के कथनात्मक वर्णनों से एकत्रित करना पड़ता है जिन्होंने उसे प्रत्यक्ष अनुभव किया है।

यह बात उनके मध्य 1960 के दशक में इबादान विश्वविद्यालय के अध्यक्ष के रूप में बिताए गये वर्षों पर बहुत सही बैठती है। विशेष तौर पर अफ्रीका और नाइजिरिया के लिए उनका स्नेह बहुत स्पष्ट था लेकिन जो उन्होंने नाइजिरिया के लिए किया, उसे वे स्वयं कभी भी ''मानवशास्त्र और समाजशास्त्र के औपेनेशीकरण (decolonization)'' की संज्ञा से अलंकृत नहीं करते। तथापि यह ऐसा ही था जिसे आंशिक रूप से उनके शिक्षण, शोध एवं पाठ्यक्रम संशोधन के द्वारा और दूसरी तरफ समान महत्वपूर्ण रूप से युवा नाइजिरियाई विद्वानों की एक पीढ़ी को उनके कैरियर के दौरान समर्थन करने की प्रतिबद्धता के द्वारा मुकम्मल किया गया। पीटर इकेह ने इस समर्थन के प्रति अपनी स्थायी निष्ठाा दर्शाते हुए (गार्जियन के 26.6.11 के अंक में) मृत्युलेख में उन्हें श्रद्धांजली दी और यह अनेकों के अनुभव के लिए सही होनी चाहिए।

एक अफ्रीकी का अफ्रीका के प्रति यह प्यार लचीला था। जब करीब पच्चीस वर्षों के पश्चात् अनेक यात्राओं में से एक पर वे मार–पीट के शिकार हुए और गंभीर रूप से घायल हो गये तब भी उनके संदेशों में आत्म दया या अभियोग पत्र के शब्द नहीं होते थे। इन संदेशों में सिर्फ की–बोर्ड पर पुनः कार्य सीखने व कार्य को निरन्तर करने का व्यवहारिक विस्तृतीकरण का वर्णन होता था।

रोनाल्ड रार्बटसन के 'ग्लोबलाइजेशन' शब्द के ईजाद से पूर्व, उल्फ उपासला के छोटे से शहर से अपने वैश्विक नेटवर्क और नियमित आने वाले नाइजिरियन दोस्तों के साथ सक्रिय हो कर जी रहे थे। तद्नुसार, आई. एस. ए. के उपाध्यक्ष (1974–78) के रूप में वे विश्व कांग्रेस को उपासला लाने के लिए विशेष रूप से इच्छुक थे। उनकी यह इच्छा थी कि यह आयोजन अविस्मरणीय हो और स्वीडन और सामान्य तौर पर स्केन्डीनेविया के लिए अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र का प्रदर्शन करें। क्योंकि वे एक आवेशपूर्ण सिद्धान्तवादी जो कि समकालीन प्रकार्यवाद एवं मार्क्सवाद दोनों के समान रूप से आलोचक भी हैं, इस कांग्रेस का मुख्य आकर्षण पारसन्स एवं पोलान्जास के बीच होने वाली बहस था। अन्य कार्यक्रमों के बीच टकराव से बचने के लिए इस कार्यक्रम को एक शाम के लिए सूचीबद्ध किया गया और इसे बड़े पर दूरस्थ औला में आयोजित करने का निर्णय लिया गया। दुख का विषय है कि इस आयोजन में सम्मिलित होने के लिए जब बहुत सारे लोग वर्षा में भीगते हुए पहुँच गये तो अध्यक्ष ने इन दोनों दिग्गजों के आने में असमर्थता व्यक्त करता टेलीग्राम पढ़ कर अपने कर्तव्य का निर्वाह किया। मूसलाधार बारिश में हम छाते लगाये लौटने लगे। पूरी भीगी और काफी रास्ता बाकी होने की स्थिति में मुझे अपने पीछे एक रेंगती हुइ कार (इमतइ.बतूंसमत) के चलने का अहसास हुआ। अंततः वह कार मेरे बराबर में आई और उल्फ ने मुझे मौसमी तत्वों से बचाया और फिर अपने अन्य भीगे दोस्तों की सलामती देखने आगे बढ़ गये।

उनके आई. एस. ए. के अध्यक्ष (1978–82) बनने के पश्चात् मैंने अपनी प्रकाशन में भूमिका के कारण बहुत नजदीकी से काम किया। कार्यकारिणी की बैठकें गर्माते विवाद/बहस और नींद के समय में कटौती के साथ भोर तक चलती। जिन अध्यक्षों के साथ मैंने कार्य किया है उनमें से सिर्फ दो ही – टाम बोटोमोर और उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड, ऐसे थे जो कि संभावित विस्फोटों को अपनी युक्तिसंगत बातों से छितरा सकते थे। उल्फ के पास अपने सहयोग के लिए एक विशिष्ट प्रकार का उपकरण था। वे भारी धूम्रपान के बिना रोक टोक वाले दिन थे और उल्फ पाइप–स्मोकर की आवश्यक वस्तुएं: आठ पाइप का एक रैक जिसका महत्व मैं कभी समझ नहीं पाई; कुरेदने, अवरोध दूर करने और सफाई के लिए अत्यावश्यक उपकरण एवं धूम्रपान के कई टिनों को सावधानीपूर्वक जमाकर उसके पीछे बैठते थे। यह अब प्रकार्यात्मक कर्मकाण्ड के लिए मंच–स्तम्भ थे और इनका बैठक को प्रदूषित करने का कोई मंतव्य नहीं था। तर्कसंगत कर्ता यह अवश्य सोचेगा कि इतने कम अन्त्र की सन्तुष्टि के लिए इतने उपकरणों की क्या आवश्यकता है। यह काफी नहीं था। जैसे जैसे बहस गर्माने लगती और गुस्सा बेकाबू होने लगता उल्फ पाइप क्लीनर से अपनी सफाई की तल्लीनता को और बढ़ा देते और अंत में कोमलता से समझौते का एक नुस्खा पेश कर देते। इतने वर्षों में मैंने उन्हें कभी भी ऊँची आवाज में बात करते नहीं सुना और उनके नुस्खे स्थिर नहीं अपितु हमें आगे ले जाते थे।

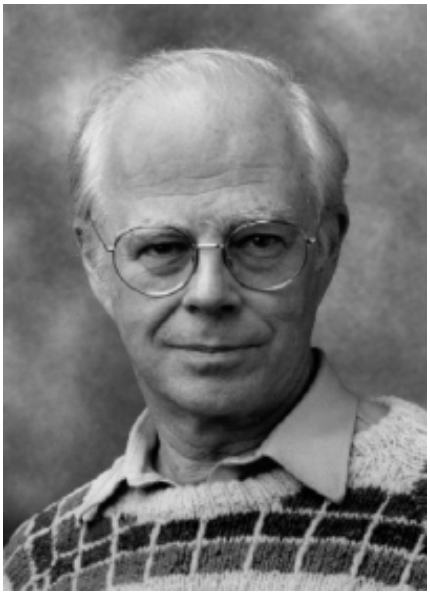

उल्फ हिमेलस्ट्रान्ड, 1924–2011.

उल्फ के साथ सहशासन (collegiality) दोस्ती का तरीका भी भी। इसमें घर पर जाना और औपचारिक बैठकों का समन्वय था। एक बार जब वे इंग्लैण्ड में व्याख्यान दे रहे थे तो अपने साथ अपनी साइकिल ले आये। उन्होंने हमारे आक्सफोर्ड के बाहर स्थित हमारे घर पर मिलने आने का प्रस्ताव दिया। इसको उन्होंने 60 मील दूर स्थित ओपन विश्वविद्यालय से साइकिल पर आकर पूरा किया और स्वीडिश शिष्टाचार के अनुरूप उन्होंने मुझे भेंट भी दी। वह साइकिल चलाते हुए अंग्रेजी की उत्तर आक्सफोर्ड शायर हेजग्रोस की प्रशंसा में लिखा गया एक गडरिये का गीत था। इसके लम्बे समय के पश्चात जब भी कोई साइकिल सवार मेरे घर के दरवाजे पर आता तो मेरे दोनों छोटे बेटे अध्ययन कक्ष में घुसकर उत्साह से 'ऊल्फ', उल्फ वापिस आ गये'' की घोषण करते।

दोस्त के रूप में उल्फ कभी दूर नहीं गये। मेडरिड (1990) में मेरे अध्यक्षीय भाषण की समाप्ति के पश्चात पोडियम से उतरने पर सर्वप्रथम उन्होंने ही मुझे बधाई दी। उन्होंने यह बधाई फूलदार तारीफ से नहीं बल्कि गर्मजोशी से बाहों में जकड़कर दी। मैं कई बार उनके द्वारा मेरे कार्य की उदार समीक्षा से परिचित हुई जिसे उन्होंने कभी घोषित या मुझे अग्रेषित नहीं किया। परन्तु कुछ लोगों के विपरीत उन्होंने मेरी हर पुस्तक को प्रारम्भ से अन्त तक पढ़ा।

अब वे हमें छोड़ गये हैं और मुझे इस बात का अफसोस है कि मैं उन्हें कभी यह नहीं बता पाई कि उनकी दोस्ती मेरे लिए कितनी अमूल्य थी। यदि इस छोटी सी श्रद्धांजली में उल्फ के समाजशास्त्रीय योगदान के विस्तार के बजाय उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं पर अधिक केन्द्रित किया गया है तो यह इसलिए है कि मेरे अनुसार सार्वभौमिक रूप से सर्वाधिक मान्यता प्राप्त सज्जन व्यक्ति कहलाना अधिक बड़ी उपलब्धि है। ■

> दक्षिण काकेशस में पितृसत्ता को चुनौती

गोहर शहनजरयान, येरेवन राज्य विश्वविद्यालय, अर्मेनिया।

महिलाओं के प्रति हिंसा उन्मूलन के अन्तर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर येरेवन में विरोध प्रदर्शन। फोटो – गोहर शहनजरयान

सन् 1991 में सोवियत संघ के पतन के साथ अर्मेनिया और दक्षिण काकेशस के सम्पूर्ण क्षेत्र में महिला आंदोलनों की नई चुनौतियों का उद्घाटन हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की मदद एवं वित्तीय सहायता से महिलाओं के गैर सरकारी संस्थान स्थापित किये गये। 2003 में हमने प्रवासी एवं अर्मेनिया की युवा महिलाओं का समूह बनया और अर्मेनिया, जार्जिया और अजरबेजान में युवा महिलाओं के समक्ष आने वाली समस्याओं पर चर्चा शुरू की। चूंकि हमारे पास कोई कार्यालय की जगह नहीं थी अतः हम आर्मेनिया की राजधानी, येरेवन के डाउनटाउन स्थित आर्टब्रिज नामक एक कैफे–बुक स्टोर पर एकत्रित होते थे। एक वर्ष पश्चात हमने अपने और उन युवा महिलाओं के लिए जो कि हाशिये पर रहने का, कमतर आंका जाने का और नहीं सुने जाने का विरोध करती थीं के लिए एक अधिकृत जगह के सृजन की सोची। यह जगह उत्तर–सोवियत अर्मेनिया में युवा महिलाओं के लिए बनाया गया पहला संसाधन केन्द्र (resource center) बना। शुरूआत में हम येरेवन राज्य विश्वविद्यालय के कैम्पस में स्थित थे और हम युवा महिला छात्राओं के लिए ड्राप–इन सेण्टर के रूप में भी कार्य करते थे।

शीघ्र ही विश्वविद्यालय की नौकरशाही व्यवस्था ने हमारी गतिविधियों को बाधित करना शुरू कर दिया। हमें इमारत से 6 बजे तक निकलना पड़ता था और लैंगिकता, यौन स्वास्थ्य एवं विश्वविद्यालय में यौन प्रताड़ना जैसे विषयों पर चर्चा करना निषिद्ध था। अतः हमें मजबूरन विश्वविद्यालय से जाना पड़ा और हमने अपने आप को स्वतन्त्र गैर सरकारी संस्थान के रूप में पंजीकृत करा लिया। हमने इसे 'वुमन्स रिसोर्स सेण्टर' (www.womenofarmenia.org) का नाम दिया। 2006 से हम डाउनटाउन येरेवन में ही स्थित हैं और हम सभी आयु, शैक्षणिक

> >

स्तर, यौन अभिमुखन एवं सामाजिक पृष्ठभूमि की महिलाओं के लिए खुले हैं। कई लोगों को हमारे बारे में जानकारी हमारी महिला अधिकारों के बारे में मासिक प्रशिक्षण के द्वारा मिली। इन प्रशिक्षणों में हम विश्व के विभिन्न हिस्सों और आर्मेनिया में महिलाओं के प्रति भेदभाव, आर्मेनिया के महिला आंदोलन का इतिहास, पितृसत्ता, शक्ति एवं महिलाओं के प्रति हिंसा के बीच संबंध और लिंग भेद निर्माण के सामाजिक–सांस्कृतिक आधार पर चर्चा करते हैं। शिक्षण कार्यशाला, पाठ्यक्रम और प्रकाशन के अलावा, हम भिन्न पैरवी आयोजनों (advocacy events), मार्च, संयुक्त प्रदर्शनी और पर्वों के आयोजन के माध्यम से उत्तर–सोवियत/पश्चात युवा की उदासीनता और तटस्थता को हिलाना चाहते हैं। हम आर्मेनिया और दक्षिण काकेशस के सम्पूर्ण क्षेत्र (जिसमें जार्जिया, अजरबेजान और तीन संघर्ष के इलाके–नगोरनो, खराबाख, दक्षिण आसेटिया एवं अबखाजिया सम्मिलित हैं) में लोगों को कई लिंग भेद के मुद्दों पर लामबंद करते हैं। सामान्यतः हमारे कार्यक्रम विवादास्पद और निषिद्ध विषयों/मुद्दों जैसे महिलाओं की कामुकता, कौमार्यता (virginity) एवं महिलाओं के विरूद्ध यौन प्रताड़ना के इर्द गिर्द संयोजित किये जाते हैं। उदाहरण के लिए, 2008 में हमने एक कलात्मक कार्यक्रम ''बरिइंग द रेड एपल'' (Burying the Red Apple) का आयोजन किया। 'लाल सेब' का अनुष्ठान महिलाओं के शरीर और कामुकता को नियन्त्रित करने का एक पितृ सत्तात्मक अनुष्ठान है। यह अभी भी आर्मेनिया के छोटे कस्बों और गाँवों में युवा दुल्हन की कौमार्यता (Virginity) के प्रतीक के रूप में सामान्य है।

इस अनुष्ठान के अनुसार दुल्हन के परिवार जन और ससुराल वाले विवाह के दूसरे दिन नव विवाहित जोड़े के घर पर जाते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि दुल्हन अभी अक्षत्योनि (Virgin) है। दुल्हन की कौमार्यता के प्रतीक के रूप में अपने साथ लाल सेब की टोकरी लाते हैं।

हम शांति निर्माण की प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका पर भी कार्य कर रहे हैं। 1990 के बाद इस क्षेत्र में होने वाले तीन हिंसक युद्ध के कारण भी यह बहुत महत्वपूर्ण है। वास्तव में, अभी भी हमारे यहाँ ''कोई युद्ध नहीं, कोई शांति नहीं'' की स्थिति है। फलस्वरूप, हमारे समक्ष हजारों शरणार्थी हैं जो कि उदासी व पोस्ट ट्रामोटिक स्ट्रेस सिन्ड्रोम से ग्रसित है। अतः हमने महिलाओं को मनौवैज्ञानिक प्रोत्साहन और चिकित्सीय परामर्श देने हेतु अपने केन्द्र की एक शाखा नगोरना खराबख में खोली है। हमने व्यवसायिक संपर्क बनाने की कोशिश की है ताकि वे अपनी हस्तनिर्मित वस्तुओं को बेच सकें। युद्ध के दौरान पनपी शत्रुता की भावना को दूर करने के लिए हम तटस्थ स्थान जैसे इस्तांबुल, जार्जिया, जहाँ आर्मेनियन और अजरबेजानी मिल सकते हें, में संयुक्त बैठकों का आयोजन करते हैं।

जार्जिया और अजरबेजान के अपने सहकर्मियों के साथ मिलकर इस वर्ष हमने मशहूर 'वेजाइना मोनोलोग' (Vagina Monologue) का अर्मेनिया, अजरबेजानी एवं जार्जिया और कुछ हमारे भाषाओं की बोली में सार्वजनिक रूप से पठन करवाया। यह कार्यक्रम फरवरी 2011 में जार्जिया की राजधानी, ट्ब्लीसी में आयोजित हुआ। हमें इस बात का बहुत डर था कि इस प्रयास की निंदा की जायेगी लेकिन आश्चर्यजनक रूप से यह सफल हुआ। पुरूष और महिलाएँ दोनों ही महिलाओं के प्रति हिंसा और भेदभाव, उनके शरीर और कौमार्यता की कहानियाँ सुनने आये। एक प्रतिभागी ने कहा, '' भिन्न भाषाओं को एक साथ सुनने और महिलाओं के स्वयं के होने से कामुकता, शरीर, जन्म, बलात्कार, खोज की कहानियों को इतिहास और अनुभवों के साथ सुनने का एक विलक्षण अवसर था।'' ऐसा प्रतीत होता था मानो बोलने की इस क्रिया ने तीनों देशों के बीच की सीमाओं को समाप्त कर दिया है।

हमारी एक नवीनतम उपलब्धि, जिस पर हमें बड़ा गर्व है, अर्मेनियन अपराधिक संहिता में यौन हिंसा कानून में परिवर्तन और संशोधन की रूपरेखा तैयार करना है। यह रूपरेखा अभी संसद में विचाराधीन है और हम आशा करते हैं कि यह पतझड़ (फाल) सुनवाई के दौरान स्वीकृत हो जाएगीं। वर्तमान कानून बहुत कमजोर है। उसके अनुसार यौन प्रहार अभी वर्गीकृत नहीं है और अन्य गंभीर अपराधों के समान ही दण्ड का प्रावधान है।

निश्चित रूप से, हमारे समक्ष भी कई बाधाएं आ रही हैं। ज्यादातर इस वजह से कि हम अपने आप को नारीवादी के रूप में हमेशा स्थित करते हैं जो कि स्वतः ही हमें 'उग्रवादी' और पारंपरिक पितृसत्तात्मक परिवारों को चुनौती देने वाली महिलाओं के रूप में व्यक्त करता है। ज्यादातर लोग इस बात को जानकर हैरान होते हैं कि अर्मेनिया का महिला आंदोलन यू. एस. या युरोप से आयातित नहीं है बल्कि इसकी जड़े तो अर्मेनिया के इतिहास के छठी और सातवीं शताब्दी के विधान में जहाँ पुरूष और महिलाओं के बीच समानता की बात उद्धरत है, पर जाती हैं। जनता के द्वेष के अलावा हमें महिला आंदोलनों के भीतरी तनाव भी झेलने पड़ते हैं। दुर्भाग्यवश, उत्तर–सोवियत विश्व में सभी जगह महिला आंदोलनों में कम्यूनिस्ट पार्टी में क्रियाशील महिलायें जो अब गैर सरकारी क्षेत्र में चली गई हैं का वर्चस्व है। इसके फलस्वरूप अधिकाशं उत्तर सोवियत देशों, जिसमें दक्षिण काकेशस भी शामिल है, में समकालीन महिला आंदोलन सोवियत संघ के पितृसत्तात्मक व्यवस्था के तत्वों को एवं नेतृत्व की सत्तात्मक शैली को कई बार पुनरूत्पादित करता हैं यह नये विचारों और अवधारणाओं का उच्च स्तरीय प्रतिरोधी भी हो सकता है।

महिलाओं की एन.जी.ओ. चलाने वाली उम्रदराज महिलाएँ जो कि कम्युनिस्ट पार्टी की कार्यकर्त्ता भी रह चुकी हैं और युवा महिलाएँ जो लोकतंत्र सक्रियता और सामाजिक परिवर्तन के बारे में समतामूलक विचार रखती हैं के मध्य 'नागरिक संगठन', 'जमीनी संगठन' और 'सामाजिक संगठन' जैसी अवधारणाओं की समझ में बहुत अंतर है। अतः हमारा एन. जी. ओ. के रूप में मुख्य उद्देश्य युवा महिलाओं की स्थिति और आत्म विश्वास को अधिक बलशाली बनाना है, ताकि वे महिलाओं के अधिकारों और लैंगिक समानता के लिए जागरूकता बढ़ाने, पैरवी करने और पक्ष पोषण अभियान में भाग ले सकें।

अतः दक्षिण काकेशस क्षेत्र में महिला आंदोलन के बीच एक तरफ तो लोकतांत्रिक मूल्यों और सिद्धान्तों का विकास और दूसरी तरफ महिलाओं के अधिकार और लिंग की सांस्कृतिक एवं प्रजातीय विशेषताओं की पहचान करना है। ■

> मानविकी एवं समाजविज्ञानों के भविष्य की रूपरेखा: दक्षिण अफ्रीका की एक साहसी दूरदृष्टि

अरी सितास, केपटाउन विश्वविद्यालय, आइ एस ए उपाध्यक्ष 2002–2006, एवं साराह मोसोइट्सा, विटवाटर्सरैन्ड विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका।

उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण के दक्षिण अफ्रीका के मन्त्री ब्लाड निजिमाण्ड ने समाज शास्त्री अरी सितास एवं साराह मोसोइट्सा को मानविकी एवं समाज विज्ञान के विषयों के भविष्य की रूपरेखा तथा उससे सम्बन्धित प्रस्तावों को निर्मित व प्रस्तुत करने हेतु नियुक्त किया। 'ग्लोबल डायलाग' ने इन समाजशास्त्रियों से अनुरोध किया कि वे इस प्रयास से सम्बद्ध अपने साहसी दृष्टिकोण को संक्षिप्त रूप में प्रकाशन हेतु दें। समूचा प्रतिवेदन एवं सम्बद्ध टिप्पणी जानने के इच्छुक www.charterforhumanities.co.za पर सम्पर्क सूत्र लें।

एक ऐसे दौर में जब समूचे विश्व में मानविकी एवं समाजविज्ञान के विषय दवाब का सामना कर रहे हैं, दक्षिण अफ्रीका एक नये चार्टर (प्रारूप) को विकसित कर रहा है जो मानविकी एवं समाज विज्ञानों (एच एस एस) को उच्च शिक्षा से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के गहन अध्ययन के वादों से महत्वपूर्ण रूप में जोड़े। दक्षिण अफ्रीका के उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग ने इस हेतु विशेषज्ञों की एक समिति एवं सन्दर्भ समूह का गठन किया। इस प्रारूप की रचना में हम उन विद्यमान अनगिनत समस्याओं का सम्मिलन नहीं चाहते थे जिनकी सामान्यतया चर्चा की जाती है। हम केवल उन मुद्दों एवं प्रयासों तक भी नहीं रूकना चाहते थे जो दक्षिण अफ्रीका में रही रंगभेद/प्रजातिवाद की विरासत की समाप्ति को व्यक्त करते हैं। हमारा मुख्य प्रयास एक ऐसी भविष्य–दृष्टि एवं एक ऐसे शिल्प की प्रस्तुति करना था जो भविष्य के लिए उपयुक्त व समीचीन हो।

जब पहली बार उत्तर–नस्लवाद/प्रजातिवादी चरणों को देश की तृतीयक शिक्षा प्रणाली द्वारा शिक्षा शास्त्र एवं अनुसंधान के संचालन में आवश्यक मान कर सम्मिलित किया गया तो यह तत्काल जरूरी समझा गया कि एक अत्यन्त जरूरी एवं संवेदनशील माँग पर प्रतिक्रिया की जाए अर्थात् उसे उत्तर दिया जाय। सेमुअल कैसिल ने अपनी पुस्तक 'द इन्फोर्मेशन एज' के तीसरे खण्ड (1998) के प्रारम्भ में लिखा है ''इस पृथ्वी के चारों तरफ एक गतिशील वैश्विक अर्थव्यवस्था निर्मित हो चुकी है जिसने समूचे विश्व में मूल्यवान व्यक्तियों एवं क्रियाओं को परस्पर सम्बद्ध किया है और उन्हें शक्ति एवं धन तथा जनता एवं भौगोलिक भू भाग/सीमा के जाल से व्यापक स्तर पर कमजोर एवं गैर महत्वपूर्ण भी किया है क्योंकि प्रभुत्वशाली हितों के परिप्रेक्ष्य में ये जाल अनुपयोगी लगने लगे हैं।''

कैसल ने उन लोगों के भविष्य का अत्यन्त भयावह एवं विचलित करने वाला विमर्श प्रस्तुत किया है जो 'चौथे विश्व' का भाग बने रहने के लिए मजबूर है। कैसल के अनुसार 'चौथे विश्व' के लोग 'डिजीटल डिवाइड' का भाग है और नये स्वरूपों के बहिष्करण/वंचन का शिकार हैं। दक्षिण अफ्रीका के नेताओं ने 'सूचना पूँजी' के इस 'अन्धे कूएं' में डूबने से बचाव को एक ऐसा लक्ष्य बनाया जिस पर समझौता नहीं किया जा सकता। अनेक लोगों ने मत व्यक्त किया कि अफ्रीका में पनप रहे निराशावाद को दूर किया जाए इस हेतु आवश्यक है कि 'स्वयं को स्वयं' से बचाया जाय इसका परिणाम एक ऐसी नीति के प्रारूप की रचना के रूप में हुआ जिसमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को प्राथमिकता दी जाय। यह ऐसा प्रयास था जो ऐकेडमी की स्थापना से जुड़ा ताकि आर्थिक वृद्धि की प्रक्रिया को तीव्रता दी जा सके।

मानविकी एवं समाज विज्ञान (एच एस एस) इस कारण कम महत्वपूर्ण बन गये और इनसे सम्बद्ध अध्ययन एवं योगदान तथा इन विषयों से जुड़े बुद्धि जीवियों की उपेक्षा की जाने लगी। उपलब्ध अनुदानों में सरकार के पूर्वाग्रही निर्णय साफ नजर आने लगे। जॉन हिगिन्स ने इस प्रवृत्ति को 'STEM' मॉडल (प्रारूप) (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, यान्त्रिकी एवं प्रबन्धन–Science, Technology, Engineering, Management) के साथ जोड़ा है जो इन क्षेत्रों में अनुसंधान एवं उत्पादकता को प्रोत्साहित करता है और 'एच. एस. एस. ज्ञान क्षेत्र' को हतोत्साहित करता है और उसके प्रति संवेदनहीनता को व्यक्त करता है। इस 'एक विषय केन्द्रित' दृष्टिकोण की व्यापक चेतना निर्देशित आलोचना चारों तरफ है क्योंकि यह समूची विश्व व्यवस्था में उच्च शिक्षा के क्षेत्र को 'कारपोरेटाइजेशन' से जोड़ती है। यह जुड़ाव तीखी आलोचना का हिस्सा है।

एक हजार से अधिक सहयोगियों, जिनका सम्बन्ध उच्च शैक्षणिक संस्थानों से था, सरकार से सम्बन्धित उन दलों जिनकी इस विषय में रूचि थी, तथा नागरिकीय समाज के साथ गहन विमर्श के उपरान्त हम इस मत से सहमत हैं कि मानविकी एवं समाज विज्ञान से जुड़ा चिन्तन एवं अध्ययन विरासत, इतिहास, स्मृति एवं विभिन्न अर्थों को संरक्षण प्रदान करता है विशेषतः उन पक्षों को जिन्हें आधार बना कर एक ऐसा दक्षिण अफ्रीका उभरता है जो शान्ति, समृद्धि, सुरक्षा एवं सामाजिक–आर्थिक कल्याण हेतु प्रतिबद्ध है।

सावधानीपूर्वक विचार एवं विश्लेषण के उपरान्त हम ऐसी कुछ सिफारिशों एवं सुझाव के क्रम को स्वरूप दे सके जिन्हें हम बहुत मजबूत सिद्धान्तों की संज्ञा दे सकते हैं। हमने मुख्य रूप से छहः प्रकार के हस्तक्षेपों का सुझाव दिया है जिन्हें दो चरणों में लागू किया जाना प्रस्तावित है। पहला चरण सन् 2010 से सन् 2015 के मध्य तथा दूसरा चरण सन् 2015 से सन् 2018 के मध्य क्रियान्वित किये जाने का सुझाव है। ये छहः प्रस्तावित हस्तक्षेप निम्न हैं:

- –मानविकी विषयों एवं समाज विज्ञानों की समग्र अस्मिता हेतु एकेडमी/संस्थान की स्थापना, इस संस्थान का विशेष उद्देश्य अन्वेषण के क्षेत्रों को प्रोत्साहित करना होगा। प्रथम चरण में इस हेतु पाँच प्राथमिक वास्तविक विद्यालयों को तथा दूसरे चरण में चार विद्यालयों को सुनिश्चित किये गये प्रत्येक प्रान्त में (एक विद्यालय–एक प्रान्त में) स्थापित किया जाय।
- –एक अफ्रीकन नव जागरण कार्यक्रम का सृजन जो महाद्विपीय चरित्र के कार्यक्रमों पर बल दे उदाहरणार्थ यूरोपियन यूनियन के सुकरात एवं इरसमस कार्यक्रम (Socrates and Erasmus)
- –जीवन पर्यन्त शिक्षा एवं शैक्षणिक अवसरों हेतु राष्ट्रीय केन्द्र की स्थापना ताकि समता, रोजगारपरकता एवं उपलब्धता को उत्पन्न एवं संरक्षित किया जा सके।
- –छहः केन्द्रीय धुरी वाली परियोजनाओं को प्रथम चरण में समन्वित करना जो कि एच एस एस के क्षेत्र को जीवन्त रूप में प्रस्तुत करें।
- –अध्ययन सम्बन्धी विषयों/क्षेत्रों की एकजुटता को स्थापित करने के लिए एक प्रारूप का निर्माण और साथ ही नवीन प्रयासों को लाने हेतु प्रयास।
- –14 सुधारात्मक हस्तक्षेपों को प्रथम चरण में क्रियान्वित करना ताकि मानविकी एवं समाज विज्ञान के विषयों के ज्ञान क्षेत्र में वर्तमान में उभरी विभिन्न प्रकार की संकटपूर्ण स्थिति का एक बार समाधान सदैव के लिए हो सके।

हमारा तर्क है कि यदि टास्क फोर्स द्वारा बताये गये सुझावों को क्रियान्वित कर दिया जाय तो सन् 2030 तक अफ्रीका में ज्ञान क्षेत्र, शिक्षा शास्त्र, सामुदायिक क्रिया कलाप एवं सामाजिक दायित्व के दायरों में मानविकी एवं समाज विज्ञान के विषय केन्द्रीय स्थान प्राप्त कर लेंगे।

हमारी दृष्टि में यह भी उपयुक्त होगा कि हमारे संस्थान एवं हमारे अकादमिक समुदाय विश्व में ज्ञान सृजन, ज्ञान के वितरण एवं साथ ही उत्तर एवं वैश्विक दक्षिण में उत्कृष्टता के केन्द्रों के साथ समान स्तर की भागेदारी करें। तृतीयक शिक्षा (उच्च शिक्षा) एवं अनुसंधान सभी समाजों में सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए केन्द्रीय अव्यव हैं यह तथ्य अब मान्यता प्राप्त कर चुका है। हम उन तरीकों की अनुशंसा करेंगे जिनके माध्यम से हमारी व्यवस्था परिवार का एक महत्वपूर्ण अभिकरण बन सके।

हमारा सर्वाधिक महत्वपूर्ण व केन्द्रीय उद्देश्य यह है कि दक्षिण अफ्रीका महाद्वीप में एक गत्यात्मक अव्यव बन कर उभरे, वैश्विक स्तर पर हो रहे प्रयासों में साझेदारी करे एवं प्रगति एवं परिवर्तन के साथ जुड़ी विचार प्रक्रिया का उर्जामूलक केन्द्र बने। हमारी भावी दृष्टि एवं भावी स्वप्न दृष्टि भी यही है। हमें खुशी है कि CODESRIA (द काउन्सिल फॉर द डवलपमैन्ट ऑफ सोश्यल साइन्स रिसर्च इन अफ्रीका) इस प्रक्रिया को समझेगा और मानविकी एवं समाज विज्ञान विषयों के लिए अफ्रीकी सांस्कृतिक यथार्थ केन्द्रित रूपरेखा को मूर्तरूप देगा। ■

> आई.एस.ए. में प्रारम्भिक जीविकोपार्जक समाजशास्त्री[1]

एमा पोरियो, एटेनियो डा मनीला विश्वविद्यालय, फिलीपीन्स, एवं आई.एस.ए. की कार्यकारिणी की सदस्य 2006–2014

गोथेनबर्ग में आई.एस.ए. की 17वीं विश्व कॉंग्रेस के तुरन्त बाद नये चुने गए अध्यक्ष माईकल बुरावे नें आई.एस.ए. में समाजशास्त्रियों के प्रारम्भिक जीविकोपार्जन की दशा के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के उद्धेश्य से एक उपसमिति का गठन किया। आई.एस.ए. के विद्यार्थी सदस्यों के एक सवेक्षण के नतीजों का सारांश तथा साथ ही कार्यकारिणी समिति की मैक्सिको नगर में सम्पन्न बैठक (मार्च 23–25, 2011) में प्रस्तुत उपसमिति के प्रतिवेदन निम्न प्रकार हैं।

> **आंकड़ों के स्त्रोत:** उपसमिति का प्रतिवेदन निम्न स्त्रोतों पर आधारित था: 1) आई.एस.ए. के विद्यार्थी सदस्यों का इलेक्ट्रोनिक सवेक्षण (आई.एस.ए. सचिवालय द्वारा आयोजित लगभग 30 प्रतिशत जवाब दर): 2) 2000–2009 के दौरान पीएच.डी. प्रयोगशाला के विजेताओं की सूची तथा उनकी सदस्यता की स्थिति: 3) पीएच.डी. प्रयोगशाला के पूर्व सदस्यों के प्रमाणों पर आधारित, जिसमें कि जूनियर सोशियोलोजी नेटवर्क (JSN) के सदस्य और गैर–सदस्य दोनों शामिल थे: 4) जे.एस.एन. का ई–समूह: 5) पीएच.डी. प्रयोगशाला के संगठनकर्ता: 6) आई.एस.ए. के अध्यक्ष माईकल विवोरका तथा माईकल बुरावे एवं जे.एस.एन. के नेतृत्व के मध्य संवाद। इलेक्ट्रोनिक सवेक्षण में निम्न सामाजिक–जनसाख्यिकि संम्बन्धी विभिन्न चर शामिल थे यथा उम्र, लिंग, पीएच.डी. की समाप्ति का वर्ष, ई–मेल तथा डाक का पता, ग्रेजुएट अध्ययन का देश, अण्डर ग्रेजुएशन की पूर्णता का वर्ष तथा रोजगार की स्थिति।

आई.एस.ए. में प्रारम्भिक जीविकोपार्जक समाजशास्त्रियों की श्रेणी में कौन शामिल हैं? 5053 आई.एस.ए. सदस्यों में से 830 या 16 प्रतिशत प्रारम्भिक जीविकोपार्जक समाजशास्त्री[2] हैं। वे आई.एस.ए. के सदस्य हैं जिन्होनें अपनी विद्यार्थी सदस्यता शुल्क चुकाया है और अपनी एम.ए. या पीएच.डी. उपाधियों की पढ.ाई कर रहे हैं या अभी हाल ही में अपनी पढ.ाई पूरी कर चुके हैं। ये अपनी पिछली उपाधी प्राप्त करने के अधिकतम 4 साल बाद तक विद्यार्थी वर्ग में वर्गीकृत रह सकते हैं। अपने मूल देश के आर्थिक वर्गीकरण के संदर्भ में उन पर आई.एस.ए. की सामान्य सदस्यता के वितरण के तरीके ही लागू होते हैं: 507 सदस्य ए श्रेणी के देशों से है, 245 बी श्रेणी के देशों से एवं 78 सी श्रेणी के देशों से।

सर्वेक्षण के 253 उत्तरदाताओं में से 138 (56 प्रतिशत) महिलाऐं और 115 (45 प्रतिशत) पुरुष थे। अधिकतम (80 प्रतिशत) पीएच.डी. के शोधार्थी थे जबकि बचे हुए (14 प्रतिशत) ने हाल ही में अपनी पीएच.डी. और (4 प्रतिशत) ने एम.ए उपाधियां पूरी की हैं। केवल मात्र एक उत्तरदाता ही बी.ए. में अध्ययनरत था। अधिकतर स्नातकोत्तर अपनी पढाई को अपने ही देश में जारी रखे हुए थे। अधिकतर पीएच.डी. शोधार्थीयों (54 प्रतिशत) और जिनकी पीएच.डी. की उपाधियां पूरी हो चुकी थी (78 प्रतिशत) ने बतलाया कि उन्हें स्थाई रोजगार मिला हुआ है जबकि ऐसा स्नातकोत्तर उपाधिधारकों में केवल आधा ही था।

आई.एस.ए. पीएच.डी. प्रयोगशाला के पूर्व प्रतिभागियों या विजेताओं (130) और कनिष्ठ समाजशास्त्रियों की विश्र प्रतियोगिता के फाइनल के प्रतिभागियों (लगभग 45) भी आई.एस.ए. में सदस्यों की भर्ती के लिए एक संभावित आधार है। लेकिन पीएच.डी. प्रयोगशाला के (2000–2009) के 130 प्रतिभागियों में से केवल आधे (64) ही आई.एस.ए. में शामिल हुए और उनमें से भी केवल 34 नें ही अपनी सदस्यता नवम्बर 2010 तक जारी रखी।

16वीं विश्व कॉंग्रेस (डरबन 2006) में आई.एस.ए. की कनिष्ठ समाजशास्त्रियों की कार्यशाला का प्रतिभागियों ने खुद ही आयोजन किया था। तब से ही वे अपने कनिष्ठ समाजशास्त्री सदस्यों के लिए विशेष सत्रों जैसे कि 2008 में बारसीलोना फोरम तथा 2010 में गोथेनबर्ग की समाजशास्त्र की विश्र कॉंग्रेस के आयोजन में सक्रिय रहे हैं। लेकिन अन्य सदस्यों की भांति उन्हें भी इन वैश्विक घटनाओं में भागीदारी, सत्रों के आयोजन और संसाधन जुटानें में चुनौतियों का सामना करना पडता है। इसलिए वे अपनी गतिविधियों और आई.एस.ए. की वैश्विक घटनाओं में बेहतर एकीकरण और समर्थन चाहते हैं ।

उपसमिति ने जूनियर सोशियोलोजी नेटवर्क के सदस्यों के इलेक्ट्रोनिक सर्वेक्षण और साक्षातकार पर आधारित आई.एस.ए. को निम्नलिखित कार्यवाहीयों की सिफारिशें की:

1. आई.एस.ए. की वैश्विक घटनाओं जैसे कि आई.एस.ए. के 2012 में आयोजित होनें वाले ब्यूनस आयर्स फोरम और योकोहामा में 2014 के समाजशास्त्र की विश्व कॉंग्रेस के दौरान एक स्वागत कार्यक्रम का आयोजन जहां वे आई.एस.ए. के अधिकारियों और अन्य स्थापित वरिष्ठ समाजशास्त्रियों से मिल सकते हैं।
2. आई.एस.ए. की वैश्विक घटनाओं और सम्मेलनों में JSN द्वारा आयोजित सत्रों को एकीकृत किया जाना चाहिये।
3. आई.एस.ए. की वैश्विक घटनाओं में हमेशा ही प्रारम्भिक जीविकोपार्जक समाजशास्त्रियों के लिए जीविकोपार्जन उन्नति सेमीनारों एवं कार्यशालाओं का आयोजन होना चाहिये (उदाहरण के लिए उद्धरण पत्रिकाओं में किस प्रकार लेख प्रकाशित हों और किस प्रकार समीक्षा लेख लिखे जायें)।
4. प्रारम्भिक जीविकोपार्जक समाजशास्त्रियों के समर्थन हेतु आई.एस.ए. नेतृत्व को शोध समितियों, विषयगत और कार्यसमूहों, राष्ट्रीय संघों और अन्य सामूहिक सदस्यों को जोर देकर प्रोत्साहित करना चाहिये तथा विषेशतया आई.एस.ए. की सभी कॉन्फ्रेंसेज, फोरम तथा कॉंग्रेस आदी में उनकी सक्रिय भागीदारी हो (आई.एस.ए. की वित्त और सदस्यता समिति से प्राप्त आंकडे बतलाते हैं कि व्यवहार में अधिकतर आरसीज और टीडब्लूजीज अपने सदस्यों को बी और सी देशों के सदस्यों को उनके जीविकोपार्जन की प्रारम्भिक स्थितियों में अधिमान्य उपचार जैसे कि आई.एस.ए. के सम्मेलनों में भागीदारी के लिए यात्रा अनुदान देते हैं।)
5. आई.एस.ए. की पीएच.डी. प्रयोगशाला और कनिष्ठ समाजशास्त्रियों की विश्व प्रतियोगिताओं के आयोजकों को सक्रिय प्रतिभागियों को आई.एस.ए. की सदस्यता लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिये ।
6. आई.एस.ए. सचिवालय को प्रारम्भिक जीविकोपार्जक समाजशास्त्रियों के आई.एस.ए. की किसी भी गतिविधि में भगीदारी पर नजर रखनी चाहिये ताकि आई.एस.ए. के साथ उनके सम्बन्ध जारी रह सकें।
7. आई.एस.ए. के विधिक और उपनियमों में आवश्यक संशोधन किये जाएँ ताकि आई.एस.ए. में प्रारम्भिक जीविकोपार्जक समाजशास्त्रियों के एकीकरण के महत्व को पहचाना जा सके।

[1]'समाजशास्त्रियों का प्रारम्भिक जीविकोपार्जन प्रतिवेदन' पर आंशिक रुप से आधारित यह लेख उपसमिति की अध्यक्ष एमा पोरियो द्वारा 24 मार्च 2011 को आई.एस.ए. कार्यकारिणी की मैक्सिको नगर में आयोजित बैठक के दौरान प्रस्तुत किया गया। इलेक्ट्रोनिक सवेक्षण करने के लिए आई.एस.ए. सचिवालय, ईजाबेला बारलिन्सका और अन्य कर्मचारियों का धन्यवाद और उपसमिति के अन्य सदस्यों माइकल हशेह, जान फ्रिटज् और योशिमिचि साटो को उनके लिखित योगदान के लिए विशेष धन्यवाद ।

[2]प्रारम्भिक जीविकोपार्जक समाजशास्त्री से हमारा अभिप्राय उन समाजशास्त्रियों से है जो कि अपने जीवन की प्रारंभिक अवस्था में हैं और जिन्हें वास्तविक समर्थन की आवश्यकता है और जो कि युवा या कनिष्ठ नहीं हैं। ■

> महिलाओं की दुनिया

ऐन डेनिस, ओटावा विश्वविद्यालय, कनाडा, अध्यक्ष शोध समिति 05 एवं आई. एस. ए. की पूर्व उपाध्यक्ष, शोध, 2002–2006

वुमेन्स वर्ल्डस (Women's Worlds) तीन वर्ष में एक बार होने वाला महिलाओं का अंतर्राष्ट्रीय अंतःविषयी सम्मेलन का आयोजन इस वर्ष संयुक्त रूप से कार्लटन विश्वविद्यालय और ओटावा विश्वविद्यालय द्वारा और यूनिवर्सिटे डू क्यूबेक एन आउटौस (Universite' du Quebec en Outaouais) एवं सेन्ट पॉल विश्वविद्यालय के सहयोग से हुआ। यह 3 से 7 जुलाई के बीच ओटावा–गेटिन्यू में हुआ। इस सम्मेलन में हुए 2000 पंजीकरण, 800 पत्र प्रस्तुत कर्ता एवं 92 देशों के प्रतिभागी इसके अंतर्राष्ट्रीय विस्तार को व्यक्त करते हैं। दैनिक प्लेनरी सत्र कई समवर्ती (concurrent) सत्रों (दिन के तीन समय) काल में 30 सत्रों से अधिक के समकक्ष चले। प्रतिभागी अकादमिक जगत् और कार्यकर्त्ता समुदाय से थे और उन्हें नारीवाद और महिलाओं के समावेश (या उसकी अनुपस्थिति) के बारे में विविध समझ थी। यह एक दूसरे से संवाद कर सीखने का एक बेहतरीन अवसर था।

सम्मेलन की वृहद थीम ''कनैक्ट, कनवर्स, इन्क्लूजन्स, एक्सक्लूजन्स, सेकल्यूजन्सः लिविंग इन अ ग्लोबलाइज्ड वर्ल्ड'' थी। अतः विविधता और अंतर्राष्ट्रीयता का होना पूर्व निश्चित था। प्रत्येक दिन की एक थीम थी : चक्र भेदना, उच्चतम सीमा (सीलिंग) भेदना, बाधाओं को तोड़ना और नये क्षेत्र विकसित करना – अन्य शब्दों में महिलाओं के समक्ष बाधाओं व चुनौतियों से अधिक समावेशी और समतामूलक भविष्य के लिए नवाचार करना। प्रत्येक व्यापक थीम में, विशेष (substantive) विषय जैसे माइक्रो क्रेडिट, एच. आई. वी.–एडस, महिलाओं के विरूद्ध हिंसा, महिलाएँ एवं कला और ऐसे कई और विषयों पर सत्रों का ध्यान केन्द्रित था। कुछ सत्रों में पारम्परिक पत्र वाचन भी प्रस्तुत किये गये, अन्य में थीम की संरचित श्रंखला पर प्रतिभागियों के बीच बातचीत हुई, और सत्रों में संयोजक ने उपस्थित समूह के साथ ध्यान केन्द्रित चर्चा/मीमांसा का नेतृत्व किया। कभी कभी वहाँ महिलाओं की बढ़ती भागेदारी या स्वायत्तता के नये उपक्रमों के बारे में रिपोर्ट भी आई।

वुमेन्स वर्ल्डस् 2011 का एक विशिष्ट लक्षण, उसका त्रिभाषीय – अंग्रेजी, फ्रेंच, और स्पेनिश होना था। यहाँ पर अनुवाद प्लेनरीस तक ही सीमित था। कुछ सत्र द्विभाषीय थे (आवश्यकता पड़ने पर अनौपचारिक अनुवार के साथ) और अन्य सिर्फ फ्रेंच या स्पेनिश

> **“...एक दूसरे से संवाद एवं सीखने का एक बेहतरीन अवसर...”**

में थे। इस सम्मेलन में विकलांगता/पहुँच की सुगम्यता (उदाहरणार्थ, सत्रों में सांकेतिक भाषा का प्रयोग एवं व्हील चेयर की सुगमता) एवं युवा और आदिवासी महिलाओं के समावेश पर ध्यान दिया। सम्मेलन के आयोजन में ये सभी चिंताएँ स्पष्ट थीं। सम्मेलन के दौरान प्रत्येक समुदाय के सलाहकार समूह से विमर्श के द्वारा समावेश समृद्धता की सुगमता स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रही थी।

अंत में यह सम्मेलन अकादमिक जगत् एवं समुदाय के बीच सहभागिता और संवाद के बारे में था और यह व्यापकता में पूर्णतः अंतर्राष्ट्रीय था।

मैंने यहाँ प्रस्तुतीकरण की सामग्री पर जोर देने के बजाय सम्मेलन के आयोजन पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया है। यह इस आशा में किया है कि मैं सम्मेलन की विशिष्टता के बारे में जानकारी दे पाऊँ न कि सिर्फ उन सत्रों का वर्णन प्रस्तुत करूं जिनमें मैने भाग लिया।

आई. एस. ए. की आर. सी. 32: वुमन इन सोसायटी, के सदस्य एक बार पुनः वुमेन्स वर्ल्डस् 2011 में सक्रिय प्रतिभागी थे। आर. सी. 32 की अध्यक्ष एवि टास्तसोग्लाउ ने हमारी हाल ही हुई और आने वाली गतिविधियों के बारे में सूचना विनिमय के लिए ब्राउन बैग लंच का आयोजन, WW11 बाजार में आर. सी. 32 की सूचना डेस्क के अलावा वुमेन्स वर्ल्डस् में आर. सी. 32 की व्यापक और विविध रूप में भागेदारी की सूची का वितरण (circulation) किया। (यह सूची अब आई. एस. ए. वेबसाइट में आर. सी. 32 पर उपलब्ध है।) इन सब के द्वारा हम एक दूसरे के संपर्क में आ सके और आर. सी. 32 की गतिविधियाँ का प्रदर्शन कर सके।

वुमन्स वर्ल्डस् के बारे में अधिक जानकारी जिसमें वीडियो क्लिप्स, चर्चा के लिए फोरम, कार्यक्रम की पूर्ण सूची http://www.womensworld.ca से प्राप्त की जा सकती है। यहाँ आपको विषयों और वक्ताओं के विस्तार की व्यापकता का पता चलेगा। वुमेन्स वर्ल्डस् का अगला सम्मेलन तीन वर्ष बाद 2014 में है। यह भी उन चार की तरह, जिनमें मैंने 1993 से भाग लिया है, विचारों को उकसाने वाला और स्फूर्तिदायक होगा। ■

> ब्राजीलियन समाजशास्त्र और अधिक शक्तिशाली होते हुए

एलिसा पी. रीज, फेडरल यूनिवर्सिटी आफ रियो ड जनेरियो, ब्राजील, एवं आई.एस.ए. की कार्यकारिणी की सदस्य 2006–2010

ब्राजीलियन समाजशास्त्र परिषद की क्युरिटिबा की मीटिंग में ध्यानमग्न समाजशास्त्री।
फोटो – एलीजा रीज

26 जुलाई से 29, 2011 तक क्यूरिटिबा में ब्राजीलियन सोशियोलोजिकल सोसाईटी की 15वीं कॉग्रेस का आयोजन हुआ । 'परिवर्तन, निरन्तरताऐं और समाजशास्त्रीय चुनौतियाँ' जो कि सम्मेलन का प्रमुख विषय था पर बहस करने के लिए लगभग दो हजार समाजशास्त्री एकसाथ पारना राज्य की राजधानी में इकटठे हुए जो कि अपने सफल कार्यान्वयन और नवप्रर्वतनशील शहरी कार्यक्रम के लिए विशेष रुप से जाना जाता है। एस.बी.एस. अध्यक्ष के नाते सेली स्केलोन ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि हमारा संकाय ऐतिहासिक संदर्भो से निरंतर चुनौतियां लेता रहा है और हमारी सार्वजनिक भूमिका का निर्वाहन भली प्रकार से कर सकने के लिए कॉग्रेस का प्रमुख विषय प्रतिभागियों को अपने सैद्धान्तिक और पद्धतिशास्त्रीय संसाधनों की सामग्री (ज्ञान) का उपयोग करने के लिए आमंत्रित करता है।

कार्यक्रम समिति ने विषयों और प्रस्तावों का एक अद्भुत संयोजन जुटाया था जिसमें कि सारे देश के ब्राजीलियन समाजशास्त्रियों और साथ ही बहुत से विदेशी साथियों का एक लाभदायक संवाद हो सके। मुख्य वक्ताओं के भाषणों में प्रतिपादित विषयों ने मुद्धों को प्रभावशाली ढ़ग से प्रस्तुत किया। माग्रेट आर्चर, सैला बैनहबीब, रार्बट मरे, टॉम डायर, वर्नेक वियाना, और मारिया नजारेथ वान्डरले ने सैद्धान्तिक, पद्धतिशास्त्रीय और नीतिगत परिचर्चाओं को जीवन्त प्रेरणा दी। वर्नेक वियाना ने, जो कि उन दो समाजशास्त्रियों में से एक थी जिन्हे ''जीवन पर्यन्त पेशेवर'' सम्मान से नवाजा गया था, अपने भाषण ''समाज, नीतियाँ और कानून'' में आधुनिकतावाद के पुराने ब्राजीलियन अधिकारिक रास्ते और हाल के दशकों के राष्ट्र के प्रजातांत्रिकीकरण के अनुभव दोनो ही में कानूनी संस्थाओं और प्रक्रियाओं के द्वारा पूर्ण किये जा सकने वाले कार्यों की चर्चा की । मारिया नजारेथ जो कि इस इनाम की दूसरी प्राप्तकर्ता थी, ने ग्रामीण समाजशास्त्र में सैद्धान्तिक और नीतिगत मामलों की चर्चा की।

कुल मिला कर कार्यक्रम में छः मुख्य वक्ताओं के भाषण, सात विषेश सत्र, सात फोरम, तीन विषेश पाठ्यक्रम, बत्तीस अनुसंधान समितियों द्वारा आयोजित इक्कतीस गोलमेज सम्मेलन और साथ ही विद्यार्थियों द्वारा एक विशाल पोस्टर पैनल तथा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। लेकिन, इन गतिविधियों की भारी संख्या की तुलना मे इतने सारे युवा पेशेवरो और छात्रों की उपस्थिति, उनका उत्साह और महान प्रतिबद्धता अधिक रोमांचक थी जिससे कि चर्चाओं को अधिक शक्ति मिली।

अग्रणी समाजशास्त्रियों के एक छोटे से समूह द्वारा 1950 मे स्थापित ब्राजीलियन सोशियोलोजिकल सोसाईटी ने अब तक एक लम्बा रास्ता तय कर लिया है। बड़ी राजनैतिक उथलपुथल के बाद 1970 के दशक के लोकतंत्रीकरण के पहले संकेत के साथ ब्राजीलियन सोशियोलोजिकल सोसाईटी अब पुनर्जीवन प्राप्त कर चुकी है। तब से यह अपनी सदस्य संख्या और संस्थागत प्रासगिकता में तेजी से बढ़ रही है। एस.बी. एस के पूर्व सचिव के रुप में मैं जानती हूँ कि 1980 के बाद से संगठन ने उल्लेखनीय प्रगति की है। 15वीं कॉग्रेस के वातायन से देखने पर यह स्पष्ठ हो जाता है कि ब्राजीलियन समाजशास्त्र उत्कर्ष पर है, अपने राष्ट्र की प्रतिबद्धताओं के बारे में गहरी समझ और उसके समर्थन में संगठित है और विद्वानों के वैश्विक समुदाय में अपनी सदस्यता पर गर्वित है। ■